पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

आश्विन–कार्तिक, कलियुगाब्द 5119, अक्तूबर 2017

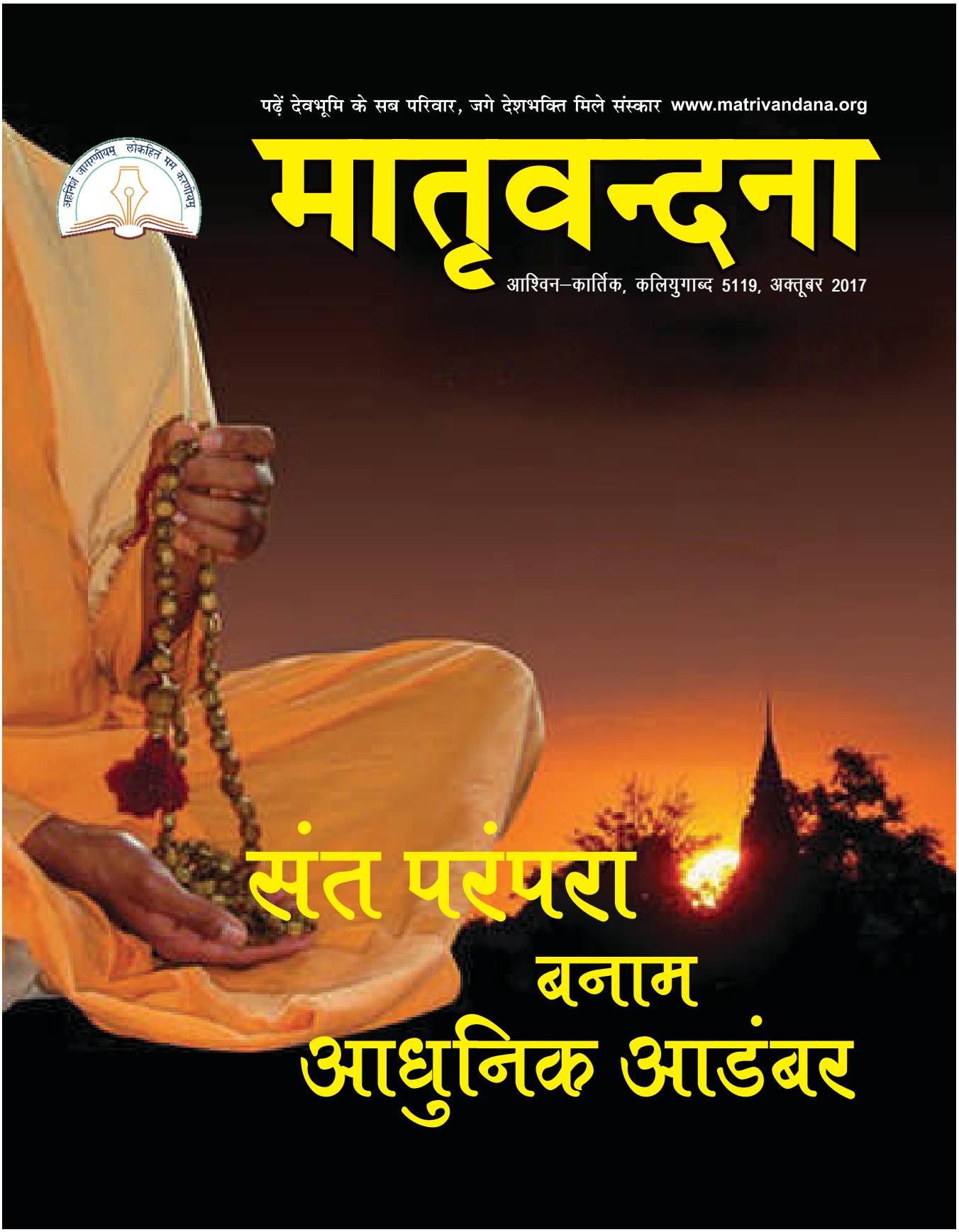

संत परंपरा बनाम आधुनिक आडंबर

एसजेवीएन विश्व पटल पर

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- 412 मेगावाट रामपुर हाइड्रो पावर स्टेशन, हिमाचल प्रदेश
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- आरएचपीएस को "जल विद्युत परियोजनाएं शीघ्र पूरी करने" की श्रेणी में "**गोल्ड शील्ड**" तथा "**सिल्वर शील्ड**"।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए '**गोल्ड शील्ड**' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 12 विद्युत परियोजनाओं का निर्माण-कार्य।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU

सीआईएन: L40101HP1988G01008409
शक्ति सदन, एसजेवीएन कॉरपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स, शनान, शिमला-171006
www.sjvn.nic.in

नमस्तेतु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमस्तुते ॥

माँ लक्ष्मी जो शक्ति की देवी हैं, जो धन की देवी हैं, जो समस्त देवताओं द्वारा पूजी जाती हैं, जिनके हाथ में शंख चक्र है ऐसी माँ लक्ष्मी को मेरा प्रणाम है।

वर्ष : 17 अंक : 10

मातृवन्दना

आश्विन-कार्तिक, कलियुगाब्द 5119, अक्तूबर 2017

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
डॉ॰ अर्चना गुलेरिया
नीतू वर्मा

पत्रिका प्रमुख
राजेन्द्र शर्मा

वितरण प्रमुख
जय सिंह ठाकुर

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990

e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, Pl-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

आडम्बर से आहत आस्था ....

आज उस परम्परा ने आडम्बर का रूप धारण कर लिया है। धर्म सम्प्रदायों में बंटा नजर आता है। इन सम्प्रदायों के शीर्ष पर पृथक्-2 धर्मगुरू, बाबा अथवा साधु सन्त बैठे हैं, जिनके व्यक्तित्व की बाहरी झलक अत्यन्त उज्ज्वल और प्रभावी प्रतीत होती है। वाक्जाल और चमत्कारों में फंसकर लाखों-करोड़ों उनके अनुयायी बन जाते हैं। जन और धन के प्रवाह से ये अपना साम्राज्य खड़ा कर अकूत सम्पति और शक्ति के मालिक बन बैठते हैं। सुपात्रता न इनमें परिलक्षित होती है न इनके अनुयायियों में सुपात्रता तो सदाचरण और श्रेष्ठ गुणों पर आधारित होती है।

सम्पादकीय	आडम्बर से आहत आस्था	3
प्रेरक प्रसंग	एक बूंद जो बन गई मोती	4
चिंतन	भारत जोड़ो-यह आज का नारा है	5
आवरण	आस्था पर भारी पड़ता अंधविश्वास	6
संगठनम्	धर्म अनेक नहीं हैं नासमझी	10
देश प्रदेश	गूगल, फेसबुक सहित सभी	12
देवभूमि	टिक्कर में सामाजिक समरसता हेतु	14
पुण्य जंयती	महायोद्धा वीर बंदा बहादुर	16
घूमती कलम	समरस समाज के बिना अन्त्योदय सम्भव नहीं	17
विविध	बाण स्तंभ से दक्षिण ध्रुव तक 'इतिहास' चमत्कारी	19
काव्य जगत	दीपावली	21
कृषि	विचौलियों से पस्त होते सेब बागवान	22
स्वास्थ्य	जानलेवा रोग स्वाइन फ्लू	23
युवापथ	ऐसे थे अपने दीनदयाल जी - पुष्प 12	24
महिला जगत	महिला उद्यमिता की पहचान- ज्योत्सना सूरी	25
विश्वदर्शन	जापान के साथ सांस्कृतिक संबंधों	26
समसामयिकी	क्या है रोहिंग्या मुस्लिम समस्या	27
प्रतिक्रिया	गौरी लंकेश हत्याकांड-जवाब माँगते	29
बाल जगत	इंटरनेट के इस युग में सतर्क रहें माता पिता	31

पाठकीय

महोदय,

पिछले सप्ताह विश्व शांति और मंगल कामना के लिये गायत्री मन्दिर में हवन यज्ञ किया जिसके माध्यम से ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाने -हम घर घर में जायेंगे, हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा साथ ही साथ युग निर्माण कैसा होगा -व्यक्ति के निर्माण से, संकल्प उपस्थित युवाओं द्वारा लिया गया। मैं अपनी ओर से मातृवन्दना संस्थान के सभी पदाधिकारियों को दीपावली की हार्दिक शुभेच्छाएं प्रेषित करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना है कि जो संकल्प लिया है उसके लिए हम सभी समर्थ होवें। ❖ **संजीव बहल, चुवाड़ी, चम्बा**

महोदय,

मौखिक तीन बार तलाक कहने से किसी की जिन्दगी के पुर्जे-पुर्जे नहीं किया जा सकते। जिन्दगी भर के लिए किसी की मुस्कुराहट नहीं छीन सकते। मुस्लिम महिलाओं पर सदैव लटकने वाली तलवार हट गई। सोशल रिर्फाम की गुजांइश कभी खत्म नहीं है बशर्ते समाज के पास इच्छा शक्ति चाहिए। भारतीय सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया कि तीन तलाक नाजायज है अनैतिक है लिहाजा यह अपराध है। मेरे विचार में यह महिला सशक्तिकरण के लिए एक और मील का पत्थर जुड़ गया है। अब सरकार को इस विषय पर कानून पारित करना होगा। केंद्रीय कानून मंत्री का मत है कि महिलाओं के हक सुरक्षित रखने के लिए पहले से ही पर्याप्त कानून हुै। भारतीय मुस्लिम महिलाएं इस फैसले से प्रसन्न हैं, लेकिन मर्द समाज से मिली-जुली प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। क्या इस कानून के दायरे में जम्मू कश्मीर भी आएगा? मुस्लिम महिलाओं के पिछ़डेपन का यह भी एक बड़ा कारण था। तीन तलाक से बर्बाद हुई जिंदगियों के बारे में सोचे कानून। कानून पारित करने के लिए सभी राजनितिक दलों का सहयोग मिले। ❖ **ई-मेल से प्राप्त**

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com
आप हमें व्हॉट्सएप, फेसबुक, टिव्टर व यू-ट्यूब पर भी संपर्क कर सकते हैं।

महोदय,

मातृवन्दना पत्रिका का मैं पिछले 20 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। पत्रिका में विभिन्न विषयों की नवीनतम तथ्यपरक एवं रोचक जानकारी प्राप्त होती है। अपने प्रदेश के विषय भी आप प्रकाशित करते रहते हैं। मुझे लगता है कि पत्रिका का पाठक ग्रामीण क्षेत्र में शहरों की अपेक्षा अधिक है। अपने यहाँ हम पर्व व उत्सव समय-समय पर मनाते हैं ही। क्या व्रत, उत्सव व कोई मंगल दिवस मनाने की विधि या जानकारी काल भी पत्रिका में प्रकाशित किया जा सकता है जिससे पाठकों को पर्व, त्यौहार मनाने में तिथि एवं समय की किसी प्रकार की त्रुटि की संभावना न हो। पत्रिका में मासिक व्रतोत्सव पंचांग को भी स्थान मिल सकता है क्या ? ❖ **राकेश शर्मा, भराड़ा, कुमारसेन।**

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को दीपावली, गौवर्धन पूजा एवं भैया दूज उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ।

स्मरणीय दिवस (अक्टुबर)

पपांकुशा एकादशी	01 अक्टुबर
मुहर्रम	01 अक्टुबर
श्री गाँधी/श्री शास्त्री जयंती	02 अक्टुबर
भगवान वाल्मीकि जयंती	05 अक्टुबर
करवा चौथ	08 अक्टुबर
रमा एकादशी	15 अक्टुबर
धन तेरस	17 अक्टुबर
दीपावली	19 अक्टुबर
गोवर्धन पूजा	20 अक्टुबर
भैया दूज	21 अक्टुबर

आडम्बर से आहत आस्था

भारत का अतीत शानदार व अत्यन्त उज्जवल रहा है। प्राचीन काल से ऋषि-मुनि, साधु-संत, योगी एवं गुरूजन अपने धार्मिक एवं दार्शनिक विचारों से मानव जीवन को मानवीय एवं आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करते रहे हैं। तीन प्रकार के कष्टों (शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक) से मानव को मुक्त कराना उनका उद्देश्य रहा है। इन महान् विभूतियों ने स्वयं को कठोर साधना में तपकर भौतिक इच्छाओं का पूर्णतया त्याग किया। ये आत्मदर्शी कष्ट साध्य जीवन व्यतीत कर मानव जाति को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहे। साथ ही सुपात्र शिष्यों को शिक्षा योग एवं अध्यात्म का ज्ञान देकर इस परम्परा को आगे बढ़ाते रहे। मध्यकाल में राजतन्त्र में अकर्मण्यता-ईर्ष्या-द्वेष के कारण एकता विखण्डित होने लगी। परिणाम स्वरूप विदेशी आक्रान्ताओं के हाथों ये मातृभूमि गुलामी की जंजीरों में जकड़ी गई। इस अन्तराल में हमने न केवल अपना वैभव खोया अपितु अपनी अस्मिता को भी गंवा दिया। कुछ एक महान् धर्मगुरू एवं त्यागशील विचारकों ने अपनी धरोहर को बचाने के प्रयास किये किन्तु स्वतंत्रता की सीढ़ी चढ़ने तक हमारी जड़ें खोखली हो चुकी थी और चिन्तन शैली में भी पर्याप्त परिवर्तन प्रतीत होने लगा था।

आज उस परम्परा ने आडम्बर का रूप धारण कर लिया है। धर्म सम्प्रदायों में बंटा नजर आता है। इन सम्प्रदायों के शीर्ष पर पृथक्-2 धर्मगुरू, बाबा अथवा साधु सन्त बैठे हैं, जिनके व्यक्तित्व की बाहरी झलक अत्यन्त उज्ज्वल और प्रभावी प्रतीत होती है। वाक्जाल और चमत्कारों में फंसकर लाखों-करोड़ों उनके अनुयायी बन जाते हैं। जन और धन के प्रवाह से ये अपना साम्राज्य खड़ा कर अकूत सम्पति और शक्ति के मालिक बन बैठते हैं। सुपात्रता न इनमें परिलक्षित होती है न इनके अनुयायियों में सुपात्रता तो सदाचरण और श्रेष्ठ गुणों पर आधारित होती है। परमहंस रामकृष्ण और उनके शिष्य विवेकानन्द सुपात्रता के अन्यतम उदाहरण हैं। नरेन्द्र (विवेकानन्द) अपनी आध्यात्मिक अपनी भूख मिटाने के लिए न जाने कितने प्रख्यात साधु-सन्यासियों से मिले किन्तु कोई उनकी भूख न मिटा सका। अन्ततः रामकृष्ण परमहंस ने भगवान् से साक्षात्कार करने का मार्ग दिखाकर विवेकानन्द को परितृप्त किया। संयोगवश या चमत्कार से कुछ इच्छाओं की पूर्ति हो जाये तो अन्धविश्वास बढ़ता जाता है। तथाकथित बाबाओं के अन्तरंग शिष्य हमें और नजदीक ले जाते हैं। रही सही कमी प्रचार माध्यमों से पूर्ण हो जाती है। महान् योगी पुरूष यम-नियम आदि अष्टांग योग का अनुपालन कर दिव्य शक्ति (अणिमा-गणिमा आदि सिद्धियां) प्राप्त करते थे किन्तु उनका कदापि प्रदर्शन नहीं करते थे। यदि कोई प्रदर्शन करता था तो वह अन्तिम लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता था।

धर्मशास्त्रों में भी कुछ ऐसी तान्त्रिक साधनाओं का उल्लेख है जिनको सिद्ध करने पर सम्मोहन (वशीकरण), अतीत की जानकारी तथा कुछ अन्य मानवेत्तर शक्तियां प्राप्त की जा सकती हैं। इन्हीं शक्तियों का प्रयोग कर आज के अधिकांश जगत- प्रसिद्ध बाबाओं ने धर्म, सियासत, प्रशासन और भ्रमित समाज को अपना गुलाम बना दिया है। इन्होंने धर्म को व्यवसाय मान कर उसे बाजारवाद का हिस्सा बना दिया है। अपने विगत कर्मों तथा इस जीवन के कर्मों के फल के अतिरिक्त हमें और कोई अच्छा-बुरा फल प्राप्त नहीं हो सकता। ईश्वरीय कृपा से बढ़कर कोई दूसरी कृपा नहीं। आत्मसंयम सदाचरण श्रम, ईश्वर स्मरण और परोपकार से बढ़कर जीवन को सार्थक बनाने का कोई दूसरा उपाय नहीं। यही धर्म का मार्ग है जिसका हम स्वयं अनुसरण कर सकते हैं। यहां किसी को अनुयायी बनने की आवश्यकता नहीं रहती। उच्च कोटि के साधु महात्मा, योगी पुरूष एवं सन्त-फकीर आज भी इस पवित्र भूमि पर विराजमान हैं। अप्रत्यक्ष रूपेण उनकी कृपा दृष्टि हम पर बनी हुई है। एकान्त में योग साधना एवं तपस्या में लीन रहकर वे विश्व कल्याण की कामना करते हैं।

धर्म, विद्या, संस्कार ही सुख के साधन हैं। सभी मनुष्य सुख चाहते हैं। सुख का मूल विद्या है लेकिन आजकल की जो विद्या स्कूल व कॉलेजों के माध्यम से हमें दी जा रही है, उससे हमारा अक्षर ज्ञान तो बढ़ जाता है परन्तु क्या वह विद्या हमें नैतिकता सिखा पा रही है। आज पढ़े-लिखे लोग क्या अपना दायित्व निर्वहन कर रहे हैं, आज क्या कोई ये सोचता है कि वे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक रूप से सक्षम हूँ मुझे समाज के लिए क्या करना चाहिए। आज भी हमारा देश मानसिक रूप से गुलाम है। क्या आज हमें राष्ट्रचिंतन धर्म चिंतन करने की आवश्यकता नहीं है। सबको एक अच्छा राष्ट्र चाहिए लेकिन उसका निर्माण कौन करेगा? आज यह बड़ा सवाल है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूलभूत सभ्यता संस्कृति गुण विचार व्यवहार कर्तव्य को समझे तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाएंगे। ❖

एक बूंद जो बन गई मोती

-प्रदीप सिंह पॉल

वर्तमान समय में जब समाज सेवा का अर्थ सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का माध्यम हो गया है और समाज सेवा शब्द एक फैशन की तरह इस्तेमाल होने लगा है। लोग जो थोड़ा बहुत दिखावा करते भी हैं तो बस मीडिया पर छा जाने के लिए। लेकिन हम आज बात कर रहे हैं भारत नवनिर्माण के जज्बे से भरे ऐसे युवा शख्स की जो ना तो कोई नेता है ना अधिकारी है। उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिले के एक बहुत ही पिछड़े गांव छेड़ी बसायक में जन्मे और इसी भूमि को अपनी कर्मभूमि मान समस्त परिवेश के लिए उत्थान और विकास का सपना देखने वाले डॉ. रविकांत की। आपके के माता-पिता किसान हैं। डॉ. रविकांत का बचपन बहुत ही अभाव में बीता था। परिवार में दो बहनों के बीच में अकेले लड़के थे। माता-पिता से मिले संस्कार और समाज में कुछ कर गुजरने की इच्छा ने बालक रविकांत को उस राह पर अग्रसर कर दिया जिनमें संघर्ष तो था लेकिन सफलता की सुगंध भी आ रही थी।

आपने आईआईटी मुम्बई से बी.टेक तथा एम.टेक किया। वर्तमान में आप स्वीडन की गोटेनबर्ग यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर के रूप में जलवायु परिवर्तन तथा वायुमण्डलीय विषय पर रिसर्च कर रहे हैं।

आपने भारत उदय मिशन का गठन किया और इसके माध्यम से ग्रामीण विकास के लिए 2007 से ही सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। इसके अंतर्गत आपने अपने गांव में 100 एकड़ जमीन में जैविक खेती द्वारा ग्रामीण भारत को रसायन मुक्त तथा लाभकारी खेती करने की सीख दे रहे हैं। रसायन मुक्त खेती के साथ-साथ समग्र ग्रामीण विकास, गौशाला का निर्माण, वृक्षों का संरक्षण, आधुनिक खेती, ऊर्जा संरक्षण, सौर ऊर्जा के बारे में आप निरंतर जानकारी देने के लिए प्रयत्नशील हैं और सफलतापूर्वक इस विषय में जानकारी दे भी रहे हैं।

ग्रामीण विकास का अर्थ लोगों का आर्थिक सुधार और बड़ा सामाजिक बदलाव लाने का है जिसके अंतर्गत ग्रामीण विकास कार्यक्रम में लोगों की बढ़ी हुई भागीदारी योजनाओं का विकेंद्रीकरण भूमि सुधार पर बेहतर ढंग से अमल मेरा लक्ष्य है। आप बताते हैं कि शुरू में हमने मुख्य जोर कृषि गुणवत्तायुक्त खेती और पशुपालन को दिया जिससे जमीनी स्तर पर लोगों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भागीदारी और सोच बदलने लगी। डॉ. रवि कांत बताते हैं कि शुरुआत में दिक्कत तो बहुत आई थी लेकिन धीरे-धीरे सूरत बदलती दिख रही है ।

डॉ. रविकांत बताते है कि मिट्टी पेड़-पौधों का पेट है। यह मिट्टी अनंत तथा असंख्य जीवों का आधार स्तंभ है। यही मिट्टी पृथ्वी पर निवास करने वाले जीवधारियों के लिए वरदान है। इस मिट्टी के द्वारा ही हम सभी को भोजन, वस्त्र, ईंधन, खाद तथा लकड़ियां प्राप्त होती हैं। लगभग 5 से 10 इंच मिट्टी से ही हम कृषि कार्यों को किया करते हैं। एक लाख मिट्टी में लाखों सूक्ष्म जीवाणुओं का पाया जाना इस बात का द्योतक है कि वे कृषि को उर्वरा शक्ति प्रदान करते हैं।

जैविक कृषि में खेत, जीव तथा जीवाशं का बहुत बड़ा महत्व है। जीवों के अवशेष से जो खाद बनती है। उसे जैविक खाद तथा उस पर आधारित कृषि को 'जैविक कृषि' कहा जाता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश जहां कि अधिकांश जनता शाकाहारी है। अत: जैविक कृषि एवं गोपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है। आपका मानना है कि परंपरागत खेती या फसल चक्र ही वह प्रक्रिया है जिसको अपनाकर संपूर्ण भारतीयों को रोजगार, स्वावलंबन तथा कुटीर उद्योगों का विकास किया जा सकता है तथा इसके माध्यम से महात्मा गांधी का 'रामराज्य', जे.पी. का 'चौखंभा राज्य', विनोबा का विश्व ग्राम तथा दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानव' एवं अन्त्योदय को दर्शाया जा सकता है।

डॉ. रविकांत ने बताया कि भारत उदय मिशन के अंतर्गत एक इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर की स्थापना की गयी है जिसमें रिसर्च करने भारत के बाहर के वैज्ञानिक भी आते हैं। डॉ. रवि कांत बताते हैं कि वह अपना यह प्रयास धीरे-धीरे उत्तर प्रदेश के बांदा, हमीरपुर, महोबा और आसपास के कई इलाकों में फैला रहे हैं। इन जिलों के लोगों को इसका फायदा भी मिल रहा है। उनका मानना है कि यदि सरकार इस मिशन में थोड़ा बहुत सहयोग कर दे तो भारत उदय का यह जमीनी प्रयास और भी बेहतर बन सकता है। ❖

भारत जोड़ो-यह आज का नारा है

-चेतन कौशल 'नूरपुरी'

अर्थात् देश तोड़ने की बात बीते कल की हो गई है। अब देश जोड़ने की बात हो रही है। युगों से हमारा भारतवर्ष जो एक आध्यात्म प्रिय देश रहा है, आज भी वैसा ही है सदियों पूर्व सोने की चिड़िया-अखण्ड भारत की अपार सुख-समृद्धि देख कुछ गिने-चुने आतताइयों ने हमारी अध्यात्म प्रियता, उदारता को ललकारा था, उसे हमारी कमजोरी समझा था। उन्होंने हिंसा, धर्मांतरण और आतंकवाद जैसे घृणित कार्यों को अपनी रणनीति का आधार बनाया था। उससे उन्होंने भारतवर्ष को लूटना आरम्भ किया था। हमारा देश जब उनके द्वारा एक बार लुटना आरम्भ हो गया तो वह बार-बार लुटता चला गया। यह निरंतर चलने वाला सिलसिला अभी तक पूर्णतः थमा नहीं है।

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हम सभी भारतीयों ने मिलकर अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध संघर्ष किया था ताकि सभी स्वतंत्र होकर सुखी जीवन यापन कर सकें, परंतु समय-समय पर उन साम्प्रदायिकवादी, विस्तारवादी, साम्राज्यवादी शक्तियों की विघटनकारी नीतियों से प्रेरित ऐसे अनेकों संगठनों का उदय हुआ, जिनकी सोच, कार्यशैली भारतीय उदारवादी सोच ''सबके सुख में अपना सुख और सबके दुःख में अपना दुःख'' समझने के स्थान पर संकुचित विचारधारा मात्र ''अपनाहित'', ''परिवारहित'' और ''राजनीतिक दलहित'' सिद्ध करने तक सिकुड़ कर रह गई। मानव समाज को जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रवाद के नाम पर षडयंत्र होने लगे और बांटा जाने लगा। परिणाम स्वरूप अखण्ड भारत के अभिन्न अंग माने जाने वाले तिब्बत, नेपाल, बर्मा, भुटान, बंगला देश, पाकिस्तान, जैसे अन्य कई बड़े भू-भाग भारतवर्ष से अलग कर दिए गए और उन्हें विश्व मानचित्र पर नये राष्ट्र बना दिया गया।

15 अगस्त सन् 1947 को आजादी पाने के पश्चात् हम यह भूल गए कि हमने सन् 1857 का सर्वप्रथम स्वतंत्रता संग्राम किसलिए लड़ा था? दुर्भाग्यवश देश में आज भी विद्यमान ऐसे अनेकों असामाजिक तत्व संगठित हैं जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाति, धर्म, भाषा के नाम पर साम्प्रदायिकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद और आतंकवाद जैसे अनेकों संगठन बनाए हुए हैं। वह सदियों पूर्व आतताइयों के दिखाए गए पद चिन्हों पर ही चल रहे हैं। उनके लिए जनहित, समाजहित और राष्ट्रहित का कोई भी महत्व नहीं है। उनका राष्ट्रीय भावना से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

सनातन कर्म-कांड और ज्योतिष विद्या को हर स्थान पर संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। विद्वानों के विद्या सृजन स्थलों की सीमाएं दिन प्रतिदिन सिकुड़ती जा रही हैं। विद्या अभ्यास, प्रतियोगिताएं और प्रयास घुट-घुट कर जीने के लिए बाध्य हैं। वैदिक विद्याओं के सृजन, पोषण और संवर्धन पर संकट के बादल छा रहे हैं।

पाश्चात्य शिक्षा की विषलता आज सुनियोजित ढंग से निश्चित होकर फल-फूल रही है। प्रशासन के द्वारा उसका बढ़-चढ़ कर पोषण भी किया जा रहा है। देश भर में शिक्षा का व्यापारीकरण जोरों पर है। किसी समय अपने आप में सशक्त, सक्षम और विश्व भर में अपनी क्षमता का डंका बजा चुकी सुव्यवस्था, संस्कार प्रदान करने वाली, जन उपयोगी परंपरागत गुरूकुल शिक्षा-प्रणाली को आज अनावश्यक, अनुपयोगी समझा जा रहा है। वर्तमान पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली देश, समाज और जनसाधारण को एक-दूसरे से अलग करती जा रही है। घर में बच्चे माता-पिता, दादी-दादा, चाची-चाचा जैसे परम प्रिय संबोधनों को लगभग भूल चुके हैं, मात्र माता-पिता को मम्मी-पापा और अन्य सभी को आंटी-अंकल ही कहते हैं। बच्चों के द्वारा अपने मां-बाप की आज्ञा न मानना, बात-बात पर उनका निरादर करना, नशा करना, जरूरत पूरी न हो तो मां-बाप को आंख दिखाना और उनकी मारपीट भी करना वर्तमान में साधारण बात हो गई है। क्या यह भारतीय संस्कृति है? क्या हम भारतवासी हैं? क्या भारतीय संस्कृति की रक्षा पश्चिम वाले लोग करेंगे? देश में भारतीय संस्कृति की रक्षा कैसे होगी? क्या भारत का विश्वगुरू बनने या बनाने का हम सबका सपना, मात्र सपना ही रह जाएगा? ❖

आस्था पर भारी पड़ता अंधविश्वास

-नीतू वर्मा

दुनिया को शांति, त्याग और आध्यात्म का संदेश देकर हमारे विभिन्न धर्मगुरूओं जैसे महात्मा बुद्ध, आदि गुरू शंकराचार्य, गुरू रामानंद और स्वामी विवेकानंद इत्यादि ने भारत को एक विशिष्ट स्थान दिलाया है। संत समाज के योगदान को संस्तुति प्रदान करते हुए, हमारे समाज ने भी धर्म गुरूओं को भारतीय सभ्यता का एक अभिन्न अंग माना है। इनके इस महत्व को मानकर हमारे देश के लाखों लोग अपनी आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने की इच्छा से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न संतों का सानिध्य प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं। समय के साथ, सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में जहां एक ओर विज्ञान का विकास हुआ है वहीं दूसरी ओर धार्मिक संस्थाओं तथा धर्म गुंरूओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है। इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में मानसिक शाान्ति की चाह लेकर लोग धर्मगुरूओं की तलाशते हैं तथा उन पर अपना तन-मन-धन न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों की घटनाओं ने धर्मगुरूओं की विश्वसनीयता पर प्रश्न-चिन्ह ला दिया। ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्होंने धर्म के नाम पर लोगों को न केवल भ्रमित किया बल्कि विभिन्न प्रकार के कुकृत्य करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हाल ही में गलत कारणों से सुर्खियों में आए प्रमुख बाबा का सच दुनिया के सामने आने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि किस तरह आम लोग तथाकथित धर्म गुरूओं के जाल में फंस जाते हैं, और फिर बिना कुछ सोचे समझे कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं।

अब यह स्पष्ट है कि प्रमुख पाखंड के रास्ते पर चलने के साथ कई तरह के अनैतिक कार्यों में लिप्त था। उसने अपने आचरण से उन सूफी संतों के मान-सम्मान को भी ठेस पहुंचाई जिन्होंने शुरूआत की और उसे लोकप्रिय बनाया। अपने अनुयायियों की अंधा-आस्था का लाभ उठाकर गुरू ने न केवल अरबों रूपये की संपति अर्जित की बल्कि अपने अनुयायियों का हर तरह से फायदा उठाया। न सिर्फ एक बल्कि कई ऐसे बाबाओं की फेहरिस्त लम्बी है जो अपने अनुयायियों के हत्या व अपहरण सहित कई जघन्य अपराध करने में संलिप्त हैं।

बीते कुछ दिनों की इन घटनाओं ने साधु संत समाज को असहज अनुभूति का अहसास करवाया है। इस असहजता का अनुमान इसी बात से लगाााया जा सकता है कि इन घटनाओं का संज्ञान लेते हुए, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने एक लिस्ट जारी कर 14 बाबाओं को फर्जी बताना पड़ा। ऐसे कई बाबा हैं जो विवादों या गलत कामों के चलते सुखियों में बने रहते हैं वहीं इनके गलत कारणों से सुर्खियों में बने रहने का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव उन साधु संतों पर भी पड़ता है जो वास्तविक रूप से समाज सुधार के कार्यों में शामिल रहते हैं।

भारतीय समाज आरंभ से ही आस्थावादी और धर्म से जुड़ा समाज रहा है। भारतीय इतिहास में ऐसे बहुत से संत हुए हैं, जो ईश्वर और आम लोगों के बीच एक सेतु का काम करते हैं। वह ईश्वरीय संदेश के साथ धार्मिक मूल्यों-मर्यादाओं के बारे में लोगों को सरलता से समझाते हैं। इसी कारण उन्हें आदर सम्मान प्राप्त होता रहा है। किन्तु समय के साथ सच्चे संतों का अभाव होता गया और उनकी जगह ऐसे लोगों ने लेनी शुरू कर दी जो न केवल लोभ व लालच से ओत-प्रोत हैं, बल्कि अपनी पूजा भगवान के रूप में करवाने की लालसा से भी ग्रसित थे। पिछले दो तीन दशकों में तो ऐसे बाबाओं की संख्या में भारी वृद्धि देखने को मिली है। ये तथाकथित धर्मगुरू अपने अनुयायियों के

अंधविश्वास का फायदा उठाकर अपना साम्राज्य फैलाने में सफल होते रहे हैं। ऐसे संत और महात्मा अपने मंसूबों में इसलिए, कामयाब होते हैं, क्योंकि लोग धर्म और आस्था में इस कदर अंधे हो जाते हैं कि सही गलत की पहचान करने की क्षमता भी खो देते हैं। आम लोगों के अलावा कई नेता, अभिनेता व कई जानी-मानी हस्तियां भी इन्हें अपना धर्म गुरू मान, अपना जीवन इनके नाम समर्पित कर देते हैं।

वैश्वीकरण, भौतिकतावाद, अहिंसा, अंधवश्विास, नई जीवन शैली का एकाकीपन, तनाव इत्यादि अनेकों ऐसे कारण हैं जो ऐसे धर्म गुरूओं के विकास का कारण बने हैं। अहिंसा, अंधविश्वास के कारण निर्धन तथा मध्यम वर्गीय परिवार ऐसे बाबाओं के चक्कर में पड़ जाते हैं जो भौतिक सुविधाएं दिलाने का प्रलोभन देकर, धर्म की गलत व्याख्या कर लोगों को दरिद्रता से बाहर निकालने का झूठा आश्वासन देकर अपना अनुयायी बनाते हैं। इसके साथ ही वे भी जिन्हें जीवन में तमाम सुविधाएं तो मिली हैं किन्तु मानसिक शांति का अभाव व तनाव है वे शान्ति की तलाश में ऐसे बाबाओं की ओर आकर्षित होने लगते हैं, जो लोगों को हर दुख, तकलीफ व तनाव से निकालने का दावा करते हैं। जो सामाजिक पहचान, जीवन की सुख-समृद्धि जैसे नौकरी, पैसा, रूतबा की तलाश में इन धर्म गुरूओं के बताए मार्ग पर चलने लगते हैं। इन बाबाओं द्वारा कई सामाजिक कार्यों में अपनी भागीदारी का दिखावे से प्रभावित होकर भी लोग अधिक संख्या में इनकी ओर उन्मुख होने लगते हैं। इन कार्यों की आड़ में वे कई तरह के आपराधिक कृत्यों में भी संलिप्त हो जाते हैं। ये सामाजिक वैधता ही है जिसे पाकर कई बाबा अति शाक्तिशाली होते हैं। जब लोग कथित बाबाओं के जाल में एक बार फंस जाते हैं तो भय और अंधविश्वास के कारण उनका बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

अपने देश में सच्चे और निस्वार्थ सेवा करने वाले संतों के अनेक उदाहरण मौजूद होने के बावजूद यह स्थिति है। समाज को समझना होगा कि धर्म के नाम पर जगह-जगह चल रही दुकानें हिंदू समाज का हित नहीं कर सकती। यह अच्छी बात है कि वर्तमान का मामला सामने आने के बाद अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने एक वक्तव्य जारी कर स्वयंभू बाबाओं को संत महात्मा कहे जाने पर आपत्ति जताई और सभी अखाड़ों को यह निर्देश दिये कि वह अपने यहां स्थापित समिति के अनुमोदन के बाद ही संतों एवं महामंडलेश्वरों को मान्यता दे सकते हैं। यह कहना कठिन है कि अखाड़ा परिषद की ओर से स्वयंभू बाबाओं की जो सूची तैयार की जा रही है उससे खुद को संत महात्मा, जगतगुरू, कथावाचक आदि कहलाने वालों पर लगाम लगाई जा सकेगी। स्पष्ट है कि अखाड़ा परिषद को कोई ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे संत, वेशभूषा वाले धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह न कर सकें। यह आसान काम नहीं है क्योंकि हर किसी को अपनी अपनी तरह से धर्म की व्याख्या करने का अधिकार है। बावजूद इसके ऐसे नियम अवश्य बनने चाहिए कि संतों और बाबाओं के लिए, क्या वर्जित है और क्या नहीं? जिससे धर्म के नाम पर मनमानी करने वाले और अंधवश्विास बढ़ाने वाले कथित संतों पर लगाम लग सके। समाज को संतों की परख अपने स्तर पर करनी चाहिए। आस्था और अंधाविश्वास के अंतर को कायम रखते हुए ही लोगों को इस ओर कदम बढ़ाने चाहियें। आमतौर पर आस्थावान लोग सुखमय जीवन और मानसिक शांति के लिए, धर्म गुरूओं की ओर उन्मुख होते हैं, लेकिन आस्थावान होने का यह अर्थ नहीं कि सारे नियम तोड़कर कानून को ताक पर रख दिया जाए।

चूँकि भक्त विवेक का प्रयोग नहीं करते, अत: उनकी श्रद्धा, अंध श्रद्धा में बदल जाती है और वे अपने गुरू या बाबा के हर अच्छे बुरे काम में उनका साथ देने के लिए आतुर हो जाते हैं। आज धर्म के नाम पर हिंसा और युद्ध का घिनौना विस्तार होता जा रहा है। यह बहुत ही आवश्यक है कि लोग अंध-श्रद्धा से बाहर निकल कर अपनी विचार पद्धति को वैज्ञानिक रूप दें, नहीं तो किसी भी प्रकार का राष्ट्रनिर्माण संभव नहीं होगा। बाबाओं के ऐसे काले-कारनामों को समाप्त करने के लिए, सरकार को भी अपनी भूमिका भली-भांति निभानी होगी। भारत की समृद्ध संस्कृति और जीवन मूल्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास करना होगा। भारतीय संस्कृति से जुड़ी बातों को शामिल करने के साथ ही लोगों को काल्पनिक वास्तविकता की दुनिया से बाहर निकलकर यथार्थ की दुनिया में ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। साथ ही इस बात की भी जरूरत है कि हमारे समाज के शिक्षित, जागरूक तथा विवेकशील लोग निर्भीक होकर ऐसे बाबाओं के खिलाफ एकजुट होकर कार्य करें, ताकि धर्म का ह्रास होने से बचाया जा सके। ❖

आस्था सही लेकिन अंधश्रद्धा खतरनाक

-योगराज शर्मा

दुनिया के किसी भी धर्म की परिभाषा बिल्कुल स्पष्ट है। इसमें किसी भी तरह की लाग लपेट नहीं है और धर्म सदा से ही मनुष्य को मनुष्य बनाने का सकारात्मक कार्य करता आया है। धर्म ने हमेशा ही समाज की नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर कर मनुष्य को चरित्रवान, सदाचार व दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाने का पाठ पढ़ाया है। धर्म का सबसे बड़ा योगदान यह है रहा है उसने एक ईश्वर की कल्पना के साथ मानव मात्र को आपसी भाई चारे का संदेश दिया है। सभी धर्मों के मूल में दया व करुणा का समावेश है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में तो धर्म को सर्वोच्च स्थान मिला है। लेकिन वैज्ञानिक चेतना के अभाव में धर्म के दिशा-निर्देश सामाजिक व्यवस्था के संचालन में सटीकता के साथ लागू नहीं हो पाते।

एक समय था जब दुनिया के प्राय: सभी समाज धर्म के द्वारा निर्देशित नियमों के आधार पर चलते थे। हालांकि उस दौर में आम जन धर्मभिरु थे और गुरु के द्वारा बताए गए मार्ग पर ही चलते थे। लेकिन बदलते समय के साथ इनमें यह पाया गया कि ये नियम व कायदे अतार्किक व बुद्धि के विपरीत हैं। अंतत: समाज में यही धारणा विकसित हुई कि धर्म व्यक्ति का निजी मामला है। जिसे ईश्वर में विश्वास करना है वह करे जिसे नहीं करना है वह न करे। लेकिन सामाजिक व्यवस्था ठोस तर्कों और वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर ही चलेगी। खासतौर पर आज हमारी न्याय पालिका इसी बुनियाद पर हमारे सामने खड़ी है। लेकिन भारत सहित एशिया और अफ्रीकी देशों में यह विचार अभी तक अपने पांव नहीं जमा पाया है। नतीजतन हमारे समाज में अभी भी कई ऐसी रूढ़ियां विद्यमान हैं जिन्हें धर्म की मान्यता प्राप्त है। भारत में इसी धर्मान्धता के कारण आम जन शिकार हो रहा है और देश में ढोंग व बाबा संस्कृति खूब फल-फूल रही है।

हाल ही में सीबीआई कोर्ट द्वारा दोषी ठहराए गए इसी ढोंगी बाबा संस्कृति का जीवंत उदाहरण आज हम सबके सामने मौजूद है। गरीब तबकों की मजबूरियों का लाभ उठाकर वह संगीनतम अपराधों का बादशाह बन बैठा था। ऐसा नहीं है कि यह किसी धर्म विशेष में ही इस किस्म के ढ़ोंगी बाबा पनप रहे हैं। कमोवेश दूसरे अन्य धर्मों में भी ऐसे बाबाओं, मौलानाओं और पादरियों के कुकृत्य आए दिनों टेलीविजन व समाचार पत्रों में देखने व पढ़ने को मिल जाते हैं। इन स्वयंभू भगवानों पर लोगों की अंधभक्ति होती है। उनके भक्त मानते हैं कि ऐसे बाबाओं के पास कोई जादुई शक्तियां हैं जिनसे वह उनके दुखों व समस्याओं का निवारण कर सकते हैं। बिना ठोस तर्कों के ही ऐसे लोग ढोंगी बाबाओं के उपदेशों की ओर आकर्षित हो जाते हैं और वे मानते हैं कि उनके गुरु उन्हें भगवान से मिला देंगे लेकिन ऐसे भक्तों के पास इस विश्वास का कोई तार्किक प्रमाण नहीं होता। चमत्कार करने की इस कला के कारण ऐसे बाबाओं का यह कारोबार दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है। शहरों से लेकर गांवों तक ऐसे बाबाओं जाल बिछा हुआ है। पैंसे देकर ऐसे बाबा अपने उपदेशों का प्रसारण देश के राष्ट्रीय चैनलों पर प्रसारण करवाते रहते हैं।

ऐसे बाबाओं ने लोगों की भावनाओं के साथ खेलते हुए करोड़ों अरबों का साम्राज्य खड़ा कर दिया है। अपने भक्तों को ब्लैकमेल कर वे उनका शोषण करते हैं। ऐसे चापलूस व ढोंगी बाबा कभी राजनीतिज्ञ तो कभी उद्योगपतियों के साथ गठजोड़ करते हैं। सत्ता व अथाह धन दौलत के कारण ही ऐसे संत मानसिक रूप से विकृत हो जाते हैं। इसी प्रक्रिया में वे व्यक्तियों को वस्तु समझते हैं और दुष्कर्म करने तक से नहीं झिझकते हैं और आस्था को ढाल बनाकर वे संगीन अपराधों में संलिप्त हो जाते हैं।

वर्तमान की ताजा घटनाओं से सबक लेते हुए आज जरूरत अंधश्रद्धा को छोड़कर धर्मानुसार आस्थावान बनने की है। अपने विचारों को वैज्ञानिक रूप देकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। ❖

समाज के शोषण का हथियार अनुच्छेद 35 ए

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

जम्मू कश्मीर के संविधान में धारा छह वहाँ के स्थाई निवासी को पारिभाषित करती है। भारत का वही नागरिक वहाँ का स्थाई निवासी बन सकता है जो या तो सन् 1954 में वहाँ का स्थाई निवासी हो या फिर उसके पूर्वज सन् 1944 से वहाँ रह रहे हैं और उनके पास राज्य में अचल सम्पत्ति हो। वहाँ का स्थाई निवासी ही राज्य में ज़मीन ख़रीद सकता है, नौकरी पा सकता है, शिक्षा संस्थानों में दाखिल हो सकता है, विधान सभा के लिए चुनाव लड़ सकता है या फिर उस चुनाव में मतदान कर सकता है। उससे भी बड़ी बात है कि जम्मू कश्मीर की कार्यपालिका ने ही भारत के संविधान में एक नया अनुच्छेद 35A डाल दिया है, जिसकी ख़बर भारतीय संसद को भी नही लगने दी। इस नए अनुच्छेद में यह व्यवस्था कर ली गई कि स्थाई निवासी को लेकर जम्मू कश्मीर सरकार जो भी क़ानून बनाएगी, चाहे वह संविधान के विपरीत ही क्यों न हो, उसे असंवैधानिक नहीं ठहराया जा सकेगा। सरकार का कहना था कि जम्मू कश्मीर ख़ास राज्य है, इसलिए उससे सामान्य तरीक़े से व्यवहार नही किया जा सकता। ख़ास क्यों है? क्योंकि यह मुस्लिम बहुल है। लेकिन यह पूरी घेराबन्दी करने पर जम्मू कश्मीर सरकार ने स्थाई निवासी की परिभाषा और अवधारणा का इस्तेमाल दलित समाज के शोषण व दमन के लिए शुरु किया। राज्य सरकार के सामने बड़ा प्रश्न था कि राज्य में शौचालयों और अन्य सफ़ाई से जुड़े काम कौन करेगा? लेकिन इसका इलाज भी उसने सोच रखा था।

जैसे ही सन् 1957 में जम्मू कश्मीर में नया संविधान लागू हुआ, राज्य सरकार ने पंजाब के वाल्मीकि समाज पर डेरे डालने शुरु कर दिए कि वे जम्मू कश्मीर में आएँ, वहाँ उनके लिए नौकरी और शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध हैं। वाल्मीकि समाज क्या, पंजाब का बच्चा बच्चा तब तक जान गया था कि राज्य में बेहतर अवसर तो क्या किसी भी नागरिक को उपलब्ध होने वाले सामान्य अधिकार भी उपलब्ध नही हैं। स्थाई निवासी का प्रमाण पत्र न होने कोई सारी उम्र जम्मू कश्मीर में गुज़ार दे, तब भी कोई अवसर उसके नज़दीक़ नही फटकेगा। लेकिन राज्य सरकार को तो सफ़ाई के लिए स्वीपर हर हालत में चाहिए थे। इसलिए उसे पंजाब के वाल्मीकि समाज को सब्ज़ बाग़ दिखाने थे। उसने पंजाब के दो सौ वाल्मीकि परिवारों को लालच दिया कि यदि वे रियासत में आकर सफ़ाई से जुड़े काम करने के लिए तैयार हैं तो उन्हें राज्य के स्थाई निवासी का प्रमाण पत्र और अन्य सभी सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी। राज्य सरकार स्वयं भी जानती थी कि यह काम वह राज्य के संविधान में बिना संशोधन किए नही कर सकती। लेकिन सरकार ने पंजाब के अनुसूचित जाति के वाल्मीकियों को धोखे से रियासत में बुला लिया। आश्चर्य है यह निर्णय भी वहाँ के मंत्रिमंडल ने लिया।

इन वाल्मीकि बन्धुओं को स्वीपर के काम में लगा दिया गया। यह ठीक है कि उन्हें सरकार ने स्थाई निवासी के प्रमाण पत्र भी जारी कर दिए। लेकिन उन्हें स्थाई निवासी के जो प्रमाण पत्र जारी किए गए उन पर दर्ज कर दिया गया कि वे केवल स्वीपर के नाते काम करने के लिए ही योग्य होंगे। आज छह दशक बाद, जब उन परिवारों की संख्या भी बढ़ गई है, उनके बच्चे पढ़ लिख गए हैं लेकिन नौकरी के नाम पर वे केवल स्वीपर ही लग सकते हैं। वे राज्य में ज़मीन नही ले सकते और उनके बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए राज्य से बाहर जाना पड़ता है। यदि मान भी लिया जाए कि संविधान राज्य सरकार को स्थाई निवासियों के वर्ग बनाने का अधिकार देता है तो क्या राज्य सरकार को यह अधिकार भी देता है कि स्थाई निवासी का एक वर्ग केवल स्वीपर का काम ही कर सकता है? कोई भी सरकार, चाहे वह कितनी भी ख़ास क्यों न हो यह कैसे कह सकती है कि उसके राज्य में वाल्मीकि समाज केवल स्वीपर का ही काम कर सकता है? चाहे वह कितना भी पढ़ जाए, लेकिन जम्मू कश्मीर सरकार उसे केवल स्वीपर के काम के योग्य ही समझती है। इसी का विरोध करते हुए तो बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर सारी आयु संघर्ष करते रहे। उन्होंने दलित समाज के लिए ही कुछ विशेष काम नियत किए हैं, फिर भी यह स्वीकार नही किया गया।

आम्बेडकर का कहना था कि किसी भी व्यक्ति को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार काम चुनने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन जम्मू कश्मीर सरकार ने पंजाब के हज़ारों वाल्मीकि बन्धुओं को एक प्रकार से बन्धक बना रखा है और उन पर स्वीपर का काम बलपूर्वक लाद रही है।

शेष पृष्ठ 24 पर ....

धर्म अनेक नहीं हैं नासमझी के कारण हो रहा संघर्ष : आचार्य देवव्रत

विसंकें। शिमला के गेयटी थियेटर में विश्व बंधुत्व दिवस के अवसर पर विवेकानंद केंद्र शिमला की ओर से स्वामी विवेकानंद के शिकागो में दिये अपने अभिभाषण के 125 वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि ईश्वर एक है उसे प्राप्त करने के लिए भले ही रास्ते भिन्न रहे हों। उन्होंने कहा कि धर्म अनेक नहीं है धर्म के वास्तविक मर्म को न समझने के कारण ही वह अनेक प्रतीत होता है। जैसे आग का एक ही धर्म है और वह है जलाना इसी प्रकार पानी से लेकर हर वस्तु का अपना निश्चित धर्म होता है। गेयटी में इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल आचार्य देवव्रत रहे, वहीं विशिष्ट अतिथि प्रदेश के भाषा एवं संस्कृति विभाग के निदेशक रामकुमार गौतम रहे, जबकि सम्मानित अतिथि विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी के संयुक्त निदेशक किशोर टोकेकर रहे। कार्यक्रम में हि.प्र. उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश श्री संजय करोल, न्यायाधीश श्री विवेक सिंह ठाकुर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के आचार्यों सहित शिमला शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

आचार्य देवव्रत ने कार्यक्रम में भाषण प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार भी प्रदान किये। विवेकानंद बौद्धिक प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार संजौली कॉलेज के अक्षय सिंगटा ने प्राप्त किया जबकि दूसरे स्थान पर विवि की यमुना कुमारी भारद्वाज रही। एचपीयू की ही मोनिका ने तीसरा और संजौली कॉलेज की गुंजन ने चतुर्थ स्थान प्राप्त कर पुरस्कार जीता। सान्त्वना पुरस्कार अभिषेक भांगड़ा को दिया गया। जुनियर ग्रुप में ताराहाल स्कूल की गौरी शर्मा ने प्रथम, डीएवी की की नमिषा चडढा ने द्वितीय और बीसीएस के दिलप्रीत भाटिया ने तीसरे स्थान पर रह कर पुरस्कार जीता। वहीं सीनियर ग्रुप में दयानंद पब्लिक स्कूल के दिव्यांशु ने पहला स्थान झटका जबकि दूसरे पुरस्कार पर पोर्टमोर की निकिता ने कब्जा किया। ❖

दिल्ली अधिवेशन में लघु उद्योगों को रियायतें देने की बात हिमाचल ने उठाई

अखिल भारतीय उद्योग संगठन लघु उद्योग भारती का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन को दिल्ली में संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में हिमाचल प्रांत की से 20 सदस्यों ने भाग लिया। अधिवेशन में प्रदेश अध्यक्ष डॉ. विक्रम बिंदल, प्रदेश महामंत्री राजीव कंसल, प्रदेश कोषाध्यक्ष विकास सेठ, प्रदेश के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट एन.पी.कौशिक, राज्य उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन, प्रदेश की फार्मा कमेटी से राजेश गुप्ता और सतीश सिंगला, नालागढ चैप्टर से अध्यक्ष हरबंस पटियाल और महासचिव कमल सैनी, बददी चैप्टर से अध्यक्ष संजय बतरा और वित्त सचिव संजय आहूजा, बरोटीवाला चौप्टर के अध्यक्ष संजीव शर्मा, काला अम्ब चैप्टर से अध्यक्ष अश्विनी गर्ग, महासचिव विकास बंसल और कैशियर के.सी. पार्रिक, परवाणु चौप्टर से अध्यक्ष प्रमोद शर्मा, महासचिव पवन कुमार, कैशियर ओमकार जसवाल, केतन पटेल और प्रकाश वर्मा ने भाग लिया। लघु उद्योग भारती के प्रदेश महामंत्री राजीव कंसल ने बताया कि दो दिन के इस अधिवेशन में हिमाचल के उद्योगों की समस्याओ पर चर्चा हुई। कंसल ने बताया कि भारत के तमाम सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों के लिए जीएसटी रिर्टन मासिक की बजाय त्रैमासिक की जाए। इसके अलावा लघु उद्योगों को जीएसटी में 50 प्रतिशत टैक्स रिबेट मिलना चाहिए जैसा कि पूर्व में डेढ करोड तक एक्साईज में छूट थी। फायर व प्रदूषण एनओसी के सरलीकरण की मांग भी हिमाचल ने उठाई।

अधिवेशन के दौरान लघु उद्योग के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष की कमान जितेन्द्र गुप्ता और नए महामंत्री गोविन्द लेले बने। हिमाचल इकाई ने नव नियुक्त अध्यक्ष और महामंत्री ने तमाम राष्ट्रीय कार्यकारिणी को बधाई दी। 9 सितम्बर को हुए सम्मेलन में मुख्य अतिथि एम.एस.एम.ई विभाग के केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि लघु उद्योगों की समस्याओं को खुलकर सामने लाया जाए और सभी सदस्यों को लघु उद्योगों की समस्याओं का एक जुट होकर निवारण भी करना चाहिए। ❖

सेवा संस्थाओं ने सामाजिक मुद्दों के निराकरण में आपसी सूझबूझ का जाना महत्व

हिमाचल प्रदेश में सेवा से जुड़ी विभिन्न संस्थाएं काम कर रही हैं, लेकिन इसकी दिशा और लक्ष्य अलग-अलग रहते हैं। इसी कारण आपसी तालमेल बढ़ाने, एक दूसरे के विषयों के बारे में जानने और अपने विस्तार के समय आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए सेवा संगम सम्मेलन का आयोजन सेवाभारती हि.प्र. द्वारा ज्वालामुखी में किया गया। द्विदिवसीय सेवा संगम में 33 संस्थाओं के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें 9 जिलों के प्रतिनिधि सम्मिलित रहे जबकि 26 महिला प्रतिनिधियों ने भी इसमें विशेष रूप से भागीदारी निभाई। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख राजकुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि सेवा ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है, सेवा करने से मानवता प्रसन्न होती है और परमात्मा सेवा करने वाले को अपना सच्चा भक्त स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा कि सेवा के विविध आयामों में कार्यरत सेवाव्रती लोगों को आपस में मिलजुल कर इस काम में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा अगर सेवाव्रती संगठन के रूप में कार्य करे तो इससे उनके ज्ञान में विस्तार के साथ लोगों को इसका भरपूर लाभ मिलेगा।

सेवा संगम के उदेश्यों को स्पष्ट करते हुए सेवा भारती हि.प्र. के प्रधान डॉ. सुरेंद्र शर्मा ने जानकारी दी कि सभी सेवा संस्थाओं को एक मंच पर लाना, आपस में परिचय करना, एक दूसरे की जानकारी का आदान-प्रदान करना समाज को समतायुक्त, शोषणमुक्त और सुखी बनाना ही इसके मुख्य लक्ष्य हैं। कार्यक्रम में सभी संस्थाओं ने चिंतन किया कि हम सभी वर्ष में एक बार स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण पर सामूहिक चिंतन कार्यक्रम आयोजित करेंगे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय सेवा भारती के न्यासी राकेश जैन, महन्त सूर्यनाथ और डॉ. रविंद्र उपस्थित रहे ।

शिमला में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण रोपे पौधे

मातृवन्दना संस्थान ने फागली के जंगल में पौधारोपण किया। इस पौधारोपण कार्यक्रम के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त भारतीय प्रशासनिक अधिकारी कांशीराम भारती ने भाग लिया। इस अवसर पर फागली के विरल स्थानों पर देवदार और छायादार वृक्षों को लगाया गया। पौधारोपण के पुनीत कार्य में स्थानीय लोगों ने भी सहायता की और फागली में किये गये इस कार्यक्रम में अपना सहयोग दिया। अवकाश का दिन होने के कारण युवाओं ने भी पौधो लगाकर इस वन उत्सव यज्ञ में अपनी आहुति दी।

कार्यक्रम को प्रारंभ करने से पहले मुख्य अतिथि ने उपस्थित लोगों को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि हमने पांगी में सबसे पहले पौधारोपण किया था जो बेहद सफल रहा था कि यहां तक की वन विभाग ने वहां पर अपना बोर्ड लगा दिया था। वन महोत्सव की शुरूआत 1950 से हुई जिसके बाद यह कार्यक्रम आयोजित होने प्रारंभ हुए। उन्होंने महात्मा बुद्ध का जिक्र करते हुए कहा कि महात्मा बुद्ध पौधों को बालक की तरह मानते थे। मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष अजय सूद ने लगाये गये पौधों के रखरखाव के बारे में अपने विचार रखे। कार्यक्रम में संस्थान के प्रबंधक महीधर प्रसाद, सचिव जयसिंह ठाकुर, पत्रिका के संपादक डॉ. दयानंद शर्मा, स्थानीय पार्षद जगजीत बग्गा सहित अनेक गणमान्य लोगों सहित स्थानीय लोग उपस्थित रहे। वृक्षारोपण की इस कड़ी में भारत विकास परिज़द, आरोग्य भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, क्रीड़ा भारती, हिमाचल ष्ठिक्षा समिति, अधिवक्ता परिज़द, स्वदेष्ठी जागरण मंच, विष्ठव संवाद केन्द्र व सेवा भारती सहित 28 संस्थाओं ने शिमला शहर के चयनित 32 वार्डों में देवदार और छायादार वृक्षों के लगभग 2000 पौधे लगाए गए। इस कार्यक्रम के संयोजक ने बताया की प्रत्येक संस्था ने रोपित पौधों की देखभाल का संकल्प भी लिया है।

गूगल, फेसबुक सहित सभी कंपनियों ने दिया ब्लू व्हेल गेम रोकने का भरोसा

ब्लू व्हेल का मकड़जाल तोड़ने के लिए गूगल और फेसबुक समेत तमाम इंटरनेट कंपनियां सरकार की मदद को आगे आई हैं। सरकार ने इस कंपनियों से कहा है कि बच्चों तक ब्लू व्हेल गेम की पहुंच समाप्त करने के लिए केवल गेम के लिंक को हटाने तक खुद को सीमित न रखें। गूगल से इस गेम से मिलते-जुलते नामों वाले गेम और वेबसाइटों की तलाश कर यह पता लगाने को कहा है कि कहीं दूसरे नाम से तो इस खेल का लिंक सक्रिय नहीं है। देश में ब्लू व्हेल गेम का शिकार होने वाले बच्चों की संख्या बढ़ने के कारण सरकार बेहद चिंतित है और लगातार इन कंपनियों पर दबाव बनाए हुए है।

इसी क्रम में सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद की पहल पर मंत्रालय ने इन कंपनियों के साथ इसके लिंक को हटाने और उसका प्रसार रोकने के उपाय करने को लेकर एक बैठक की थी। इसमें इन कंपनियों से इस जानलेवा खेल को रोकने में पूरी ताकत लगाने को कहा गया। मंत्रालय सूत्रों के मुताबिक, चूंकि गूगल सबसे लोकप्रिय सर्च इंजन है इसलिए वह इंटरनेट के अथाह भंडार में इस खेल तक पहुंचने के वैकल्पिक रास्तों की तलाश आसानी से कर सकता है। ❖ **साभार: दैनिक भास्कर**

हरियाणा में अब हिंदी में होगी तकनीकी पढ़ाई

हरियाणा बहुतकनीकी शिक्षा में निरंतर कम हो रहे विद्यार्थियों के रूझान को देखते हुए अब तय किया गया है कि बहुतकनीकी शिक्षा का पाठ्यक्रम हिंदी में तैयार होगा। यानि अब पॉलीटेक्निक की पढ़ाई हिंदी में होगी। इसके लिए केंद्रीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर प्रोजेक्ट तैयार किया गया है, जबकि इन पुस्तकों को छापने की जिम्मेवारी हरियाणा ग्रंथ अकादमी की रहेगी। हिंदू कन्या महाविद्यालय में आयोजित अकादमी के चौथे पुस्तक मेले में भी इस संबंध में विद्यार्थियों को जानकारी दी गई। प्रदेश में 28 पालीटेक्निक शिक्षण संस्थान हैं।

इनमें करीब 45 हजार विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जिन्हें इससे लाभ पहुंचेगा। राजकीय बहुतकनीकी संस्थान के प्रिंसिपल ललित वर्मा ने बताया कि क्षेत्र के काफी विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा में कमजोर होने के कारण पॉलीटेक्निक पाठ्यक्रम में रूचि नहीं लेते थे। ❖

इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश

इतिहास संकलन योजना समिति हिमाचल प्रदेश की प्रांत कार्यकारिणी की बैठक बिलासपुर के सरस्वती विद्या मंदिर कन्या उच्च विद्यालय निहाल में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में समिति के केन्द्रीय सचिव श्री शेर सिंह, प्रांत समिति के अध्यक्ष देवराज शर्मा (सेवानि. आईएएस.), प्रांत कोषाध्यक्ष इन्द्र सिंह डोगरा व सम्पूर्ण प्रांत के प्रत्येक जिले से आये कार्यकर्ता उपस्थित रहे। बैठक में समिति की इस वर्ष की योजना की समीक्षा की गई साथ ही साथ सदस्यता अभियान के लिए भी कार्ययोजना बनाई गई, जिसमें प्रत्येक जिले को न्यूनतम 50 सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा दिया गया। समिति की आगामी प्रांतीय बैठक 26 नवंबर को आयोजित करने की जाएगी। इस बैठक का मुख्य आकर्षण शहीदों के इतिहास के बारे में शोध पत्रों का भी वाचन रहा। इसमें विशेष रूप से डॉ. योगराज वर्मा, डॉ. नारायण ठाकुर व डॉ. संजय धीमान ने हिमाचल प्रदेश के शहीदों पर अपने-अपने शोध पत्रों का वाचन किया। नेरी शोध संस्थान के निदेशक चेतराम गर्ग इतिहास लेखन के विषय पर शोध संस्थान की योजना का वृत्तांत भी समिति के सम्मुख रखा। बैठक के अंत में प्रांत सह सचिव डॉ. सुरेश सोनी ने आये हुए सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार प्रकट किया।

2.09 लाख कंपनियों के रजिस्ट्रेशन रद्द, बैंक खाते भी सीज किए गए

सरकार ने 2,09,032 लाख कंपनियों को रजिस्ट्रेशन खत्म (डिरजिस्टर्ड) कर दिया है। इन कंपनियों के बैंक अकाउंट भी फ्रीज कर दिए गए हैं। ये ऐसी कंपनियां हैं जो रेगुलेटरी नियमों का पालन नहीं कर रही हैं। इन पर शेल कंपनी होने का संदेह है। जब तक नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एनसीएलटी) के आदेश से ये कंपनियां दोबारा 'सक्रिय' नहीं होतीं, तब तक इनके बैंक अकाउंट फ्रीज रहेंगे। इनके डायरेक्टर या दूसरे अधिकृत सिग्नेटरी कंपनी के बैंक खाते ऑपरेट नहीं कर सकेंगे। कंपनी मामलों के मंत्रालय ने कंपनी कानून की धारा 248 के तहत यह कार्रवाइ की है। इसमें इसे कंपनियों का रजिस्ट्रेशन खत्म करने का अधिकार दिया गया है। वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग ने बैंकों से कहा है कि वे इन कंपनियों के खातों में ट्रांजैक्शन रोकने के लिए तत्काल कदम उठाएं। इसने कहा है कि जिन कंपनियों का स्टेटस 'सक्रिय' है, लेकिन वे सालाना रिपोर्ट और दूसरी जानकारियां नहीं दे रही हैं, उनके मामलों में भी बैंक सावधानी बरतें। शेल कंपनियों का इस्तेमाल कालेधन को सफेद बनाने में होता है। पिछले साल नवंबर में नोटबंदी के बाद ऐसी कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई तेज की गई है। ❖ **साभार: दैनिक भास्कर**

चीन में रोजा रखने पर सजा और जुर्माना

बीते रमजान के दिनों चीन के वीगर मुसलमानों को रोजा रखने के अपराध में सजा के तौर पर भारी जुर्माना लगाया गया। ध्यान रहे कि चीन में रोजा रखने, मुस्लिम टोपी पहनने व दाड़ी रखना अपराध है। चीन के शिनजियांग प्रान्त में करीब 45 प्रतिशत आबादी वीगर मुसलमानों की है। चीन सरकार ने शिनजियांग में नाबालिग बच्चों को जबरदस्ती धार्मिक शिक्षा देने इत्यादि पर भी रोक लगा रखी है। विशेषरूप से कर्मचारी मुसलमानों पर पाबन्दी का ज्यादा असर होता है। ❖

हामिद अंसारी के जेहादियों से संबंधों की जाँच हो

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी द्वारा आतंकवादी संगठन पॉपुलर फ्रंट के कार्यक्रम में भाग लेने पर विश्व हिन्दू परिषद ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। विहिप के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त महासचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन ने आज एक वक्तव्य जारी कर कहा है कि जिहादियों के पक्षधर हामिद अंसारी अब अपने असली रंग में खुल कर सामने आ गए हैं। हालांकि पद पर रहते हुए भी वे अपने भाषणों से मुस्लिम समाज में असन्तोष पैदा करते हुए अप्रत्यक्ष रूप से आतंकियों के एजेंडे को ही लागू कर रहे थे। अब वे जेहादी संगठनों के संरक्षक के रूप में काम करते दिखाई दे रहे हैं। यह पूरा देश जानता है कि पॉपुलर फ्रंट सिमी का नया और विस्तृत रूप ही है। यह जेहादी और आतंकी काम तो करता ही है, केरल में देशभधकतों की निर्मम हत्याओं में भी इनके कार्यकर्ता आरोपित भी हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बन चुके लव जिहाद के कारनामों में इनके हाथ की सुरक्षा एजेंसियां जांच कर ही रही हैं। विहिप ने सरकार से मांग की है कि पद पर रहते हुए हामिद अंसारी के जेहादी संगठनों के साथ सम्बन्धों की तो विस्तृत जांच होनी ही चाहिए साथ ही, इस बात का भी पता लगाया जाना चाहिए कि देश के इस अति महत्वपूर्ण पद का दुरुपयोग कर उन्होंने किन-किन संगठनों और विचारधाराओं को प्रोत्साहन दिया।यह जानकारी पूरे देश के सामने आनी चाहिए जिससे भविष्य में कोई और इस गरिमापूर्ण पद का दुरुपयोग न कर सके।

विहिप के संयुक्त महासचिव ने कहा कि इन काले कारनामों को जानते हुए भी इसके कार्यक्रम में भाग लेना हामिद अंसारी के इरादों की पोल खोलता है। इनके विवादित बयानों पर विहिप ने पहले ही इनके इरादों पर शक जाहिर किया था। किन्तु आतंकियों को प्रोत्साहन देने वाले इस काम ने तो विहिप की आशंका को सत्य सिद्ध कर ही दिया। ❖ **प्रेस विज्ञप्ति- विहिप**

बलाणी माता मंदिर में पशुबलि प्रथा के साथ छुआछूत का भी अंत-मंदिर के पुजारी ने निभाई अहम भूमिका

उम्मीद का सूरज प्रखरता से चमकने लगा है। कुरीतियों के खिलाफ उठने वाली आवाज बाहर से नहीं, भीतर से आ रही है। नवजागरण के इस दौर में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी ने इस क्रांति की मशाल थाम ली है। देहरादून जिले के हिमाचल से छूते जनजातीय क्षेत्र जौनसार-भावर में बह रही बदलाव की बयार से न केवल पशुबलि जैसी कुप्रथाओं पर अंकुश लगा है, बल्कि मंदिरों में दलितों के प्रवेश की रहा भी खुलने लगी है। ऐसी ही एक मिसाल कायम की है चकराता ब्लॉक की पंचायत चिल्हाड़ ने। इसमें अहम भूमिका निभाई है गांव के स्याणा (वरिष्ठ जन) और बलाणा देवी मंदिर के पुजारी ने। जनजातीय परंपराओं के अनुरूप जौनसारी समाज में भी पशुबलि और छुआछूत जैसी प्रथाएं मौजूद थीं। हनोल के प्रसिद्ध महासू मंदिर में इन प्रथाओं को बंद कर दिया गया। बदलाव की यह बयार अन्य मंदिरों तक भी पहुंची। चिल्हाड़ गांव में बलाणी माता का मंदिर है। बलाणी माता महासू देवता की बहन हैं सदियों से इस मंदिर में पशु बलि दी जाती थी तो महिलाओं व छोटी जाति के लोगों का प्रवेश वर्जित था। ऐसी प्रथाओं से पार पाना ही होगा। बलाणी माता मंदिर के देवमाली रोशनलाल बिजल्वाण कहते हैं नई व्यवस्था से समाज में समरसता का संदेश जाएगा। जबकि, पुजारी लछीराम बिजल्वाण इसे ऐतिहासिक उपलब्धि बताते हैं। ❖ **साभार: हिमालय हुंकार**

स्वदेशी जागरण मंच

चीनी समान के बहिस्कार के क्रम में कांगड़ा में स्वदेशी जागरण मंच हिमाचल प्रदेश की प्रांत कार्यकारिणी की एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मंच के अखिल भारतीय विचार प्रमुख मुख्य सतीश कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे। बैठक में सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश से 50 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में स्वदेशी जागरण मंच द्वारा 28 अक्टुबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित चीनी वस्तु बहिस्कार रैली को लेकर हि.प्र. की तैयारियों की समीक्षा की गई। मंच के प्रदेश संयोजक डॉ. नरोत्तम ठाकुर ने कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों व कार्यकर्ताओं का धन्यवाद प्रकट किया। ❖

टिक्कर में सामाजिक समरसता हेतु यज्ञ और सहभोज

देवभूमि जनकल्याण संस्थान रोहडू द्वारा टिक्कर में जनकल्याण यज्ञ व समरसता भोज का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में टिक्कर की पंचायतों से सर्व समाज के लोगों की उपस्थिति रही। स्थानीय देव मंदिर में मंदिर समिति के अध्यक्ष अनोकराम जी की सहमति से प्रांगण में यज्ञ आहूत हुआ जिसमें पुरूषों के अतिरिक्त महिलाएं भी काफी संख्या में सहभागी रहीं। कार्यक्रम के संयोजक सुशांत देष्टा ने कहा कि यह यज्ञ सुदूर ग्रामीण अंचल में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में एक मील का पत्थर साबित होगा और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करते रहेंगे जो कि पीढ़ियों से चले आ रहे सामाजिक ताने-बाने को सुदृढ़ करेंगे।उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आये हुए अतिथियों व देवसमाज के अध्यक्ष व कारिंदों एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं व उपस्थित जनों का हार्दिक धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त में समरसता भोज का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी मत-पंथ बिरादरी के लोगों ने एक साथ एकभाव से मिल बैठ कर भोज का आनंद लिया। कार्यक्रम में कुल उपस्थिति 350 रही। ❖

चुनावों में मतदान की भूमिका

- दलेल ठाकुर

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में चुनाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में चुनाव किसी त्यौहार से कम नहीं होते। राजनीतिक दलों के साथ-2 आम जनता भी चुनाव के दौरान व्यस्त नजर आती है। चुनाव के बिना हम एक सफल लोकतंत्र की कल्पना नहीं कर सकते हैं। चुनाव हमें मनपसंद सरकार चुनने का अवसर देता है। चुनाव सभी को लोकतंत्र में भागीदारी का अवसर प्रदान करता है। जिस चुनाव में सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार प्रयोग नहीं होता है वह चुनाव लोकतांत्रिक नहीं हो सकता है। बिना जाति, लिंग, धर्म, रंग आदि के भेदभाव के होने वाले चुनाव वास्तव में लोकतांत्रिक कहे जा सकते हैं।

भारत का लोकतंत्र यहां के मतदाताओं के निर्णय पर टिका है। लोकतंत्र में मतदाता मालिक है, हीरो है। मतदाता प्रत्यक्ष मतदान करे या अप्रत्यक्ष मतदाता वह हीरो ही माना जाता है, लेकिन दुर्भाग्य है कि मतदाता सिर्फ चुनाव तक ही हीरो है। चुनाव के बाद चुना गया प्रतिनिधि मालिक बन जाता है। होना यह चाहिए कि चुनाव के बाद चुने हुए प्रतिनिधि को जनसेवक की भूमिका निभानी चाहिए।

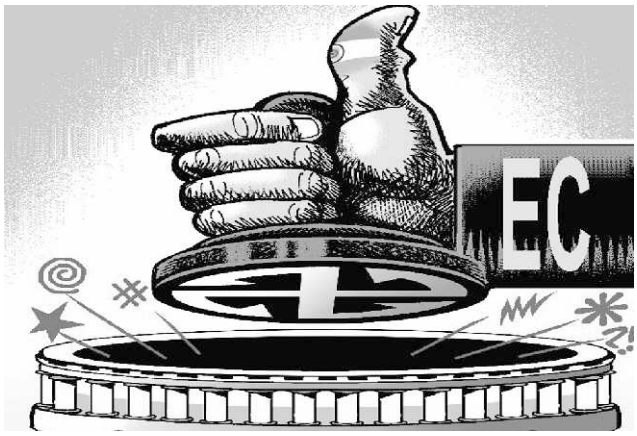

वर्तमान प्रधानमंत्री ने मैं जनता का प्रधानसेवक हूँ, यह कहकर लोकतंत्र को और मजबूत करने और मतदाता के सम्मान को बढ़ाने का काम किया है। लोकतंत्र मतदाता और चुने हुए प्रतिनिधि के विश्वास पर टिका है। विधायक या सांसद जनता के सेवक और संविधान के संरक्षक हैं। लोकतंत्र के पहरेदार हैं। प्रदेश में 14वीं विधानसभा के लिए चुनाव घोषित हो चुके हैं। हिमाचल के जागरूक मतदाताओं द्वारा 13वीं विधानसभा के लिए प्रतिनिधि चुने जा चुके हैं। प्रदेश का जागरूक मतदाता चुपचाप मतदान कर कई सत्ता परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है। मतदाताओं को अपने मत का प्रयोग बिना किसी डर के करना चाहिए। भय, पक्षपात, स्वार्थ, लालच या दबाव में मतदान नहीं करना चाहिए। मतदाता को लोकतंत्र की रक्षा, क्षेत्र के विकास और संविधान प्रदत अधिकारों के लिए मतदान करना है। इसमें कोई दबाव या भय नहीं होना चाहिए। लोकतंत्र में मतदान देश और संविधान की रक्षा के लिए किया जाता है।

आज युवाओं में चुनाव को लेकर काफी उत्साह और परिवर्तन की भावना जगी है। युवाओं की भूमिका देश के साथ-साथ प्रदेश की प्रगति के लिए उतम है। गत पांच वर्षों में 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके युवा अपने मत का प्रयोग करेंगे। देश की तर्ज पर प्रदेश में भी युवा मतदाता इन चुनावों में निर्णायक भूमिका निभाने वाला है। युवा वर्ग एक सशक्त राष्ट्र की कल्पना को लेकर मतदान करने वाला है। युवा मतदाता की प्रदेश के विकास और चुनाव में एक-एक वोट की कीमत है। हमें अपने मत का दान करते समय संजीदा रहना चाहिए। हमें यह सोच कर मतदान करना चाहिए कि अगले पांच वर्षों तक हमारा मत प्रदेश को एक नई दिशा देने वाला है। अतः प्रदेश के हर मतदाता से निवेदन है कि अपने मत का प्रयोग जरूर करें और अपने वोट की कीमत को समझें। भारतीय चुनाव आयोग के अधिकारी प्रदेश में आगामी चुनावों की तैयारी का जायजा लेने शिमला आए। यहां के स्थानीय चुनाव अधिकारियों प्रशासनिक अधिकारियों से उन्होंने मंत्रणा की। साथ ही साथ विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से भी चुनाव आयोग के अधिकारियों ने सलाह मशविरा किया।

अब दिल्ली लौटकर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव की तिथि की घोषणा से चुनावी दुन्दुभी बज चुकी होगी। मतदाता को लुभाने वाले वायदे भी राजनेता आगामी चुनावों में करेंगे लेकिन अब मतदाता की सूझबूझ व विवेक के आधार पर निश्चित ही प्रदेश में स्वच्छ छवि, रोजगार देने वाली और प्रदेश का समग्र विकास करने वाली सरकार का चुनाव होगा। ❖

महायोद्धा वीर बंदा बहादुर

-मनोज कुमार

स्वतन्त्रता की देवी की अस्मिता को लूटने के लिए कवायली हमले मुगलों ने चारों तरफ से भारत पर प्रारम्भ किए। युद्ध मानवों का नहीं बल्कि सनातन संस्कृति को समाप्त करने का था। एक हाथ में तलवार दूसरे हाथ में कुरान लेकर भारत में कत्लेआम मचाया जा रहा था। वहीं भारत माता के वीर सपूत अपने प्राणों को मातृभूमि पर न्यौछावर करने के लिए तैयार थे, तथा मुगलों से भारत के वीर नौजवान बड़ी बहादुरी के साथ लड़ रहे थे। यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि सम्पूर्ण भारत पर एक साथ कभी भी किसी विदेशी आक्रमणकारी का साम्राज्य नहीं रहा। पूर्व में भी शक, हूण, कुषाण, डच आक्रान्ताओं ने भी भारत पर राज स्थापित करना चाहा। लेकिन भारत माता की कोख से पैदा हुए वीर सपूतों ने केवल विजय ही प्राप्त नहीं की बल्कि इनको अपने में आत्मसात् कर लिया। यह हमारी गौरवशाली परम्परा की एक झलक थी।

बात करें 17वीं शताब्दी की तो उत्तर भारत में गुरू गोविन्द सिंह के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन ही नहीं शक्ति का भी प्रकटीकरण दिखाई दे रहा था। इन्हीं भावों को गुरू गोविंद सिंह ने अपने अंदर समाहित कर भक्ति और शक्ति का प्रचंड आंदोलन भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए खालसा सेना का गठन किया। जम्मू कश्मीर के राजौरी क्षेत्र में 17 अक्तूबर, 1650 ई. कार्तिक शुक्ल विक्रम सम्वत् 1727 को एक आलौकिक दिव्य शक्ति का जन्म क्षत्रिय वंश में राम सिंह के घर में होता है। यह बालक मुखमंडल पर सूर्य का तेज लेकर बाल्य काल से ही तेजस्वी होकर तीरदांजी, घुड़सवारी व युद्ध कौशल में निपुण था। उसका नाम आस-पास के क्षेत्र में बड़ी तेजी से फैल रहा था। जिसका नाम पंडितों ने लक्ष्मण देव रखा। यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं रहेगी कि जिस प्रकार भगवान राम के भाई लक्ष्मण शेषनाग के अवतार थे, उन्हीं के स्वरूप शायद फिर से यह बालक अपनी जन्मभूमि को स्वतन्त्र करवाने के लिए ही पैदा हुआ हो।

बाल्यकाल की लीलाएं सामान्य बच्चों की तरह नहीं थी। आखेट करने का शौक जैसे विरासत में मिला हो। एक दिन अपने जन्मदिन पर आखेट करने का विचार मन में हुआ, उसी धुन में लक्ष्मणदेव आखेट की तरफ बढ़ने लगा, एक हिरणी को देखकर अपने तरकस से बाण निकाल कर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते हुए शब्द की गति से बाण छोड़ा, उधर हिरणी के मन में भी व्याकुलता हुई कि यह मेरा आखिरी समय है, उसने पूर्ण रूप से शरीर को स्थिर कर बिजली की गति के समान छलांग लगाने का प्रयत्न किया पर दुर्भाग्य से बाण अपना काम कर चुका था। यहां यह कहना उचित रहेगा कि महाराज दशरथ और पृथ्वीराज चौहान की तरह ही यह बालक भी शब्द भेदी बाण चलाना जानता था। हिरणी की मृत्यु के पश्चात् लक्ष्मणदेव कटार निकाल कर हिरणी का पेट फाड़ता है, वह यह देख कर स्तब्ध रह जाता है कि हिरणी के पेट में छोटा सा शिशु बाण के भेदन से आखिरी श्वास ले रहा था। तभी वहां एक संत प्रकट होते हैं और लक्ष्मणदेव से कहते हैं, क्या तुम इस हिरणी और इसके बच्चे के प्राण वापिस ला सकते हो? जब तुम किसी को जीवन नहीं दे सकते तो तुम्हे किसी निष्पाप के प्राण लेने का भी कोई अधिकार नहीं है। संत के यह शब्द लक्ष्मण देव के मन में समुद्र की प्रचंड लहरों की तरह अशान्ति पैदा कर देते हैं।

1708 ई. ज्येष्ठ मास जो कि भारतीय इतिहास में ही नही बल्कि वीरता के इतिहास में भी स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। सरहिन्द के सुबेदार वजीर खां पर वीर बन्दा बहादुर ने सेना के साथ धावा वोल दिया और गुरू पुत्रों की शहादत का बदला लेकर सरहिन्द को नेस्तनाबूत कर दिया। यह वीर बन्दा बहादुर की एक बड़ी जीत थी। दिल्ली के बादशाह को जब यह जानकारी मिली तो उसकी चुल्हें हिल गई। अब खालसा सेना विजय उत्सव मनाने लगी।

विश्वासघात के चलते बहादुर को गिरफ्तार कर लिया जाता है। शौर्य की खालसा के अन्दर कमी नही थी। दो हजार सेना का बलिदान हुआ, मुसलमानों ने कभी सामने से लड़ाई नही लड़ी, वह गुरिल्ला नीति के तहत छुप कर आघात करना जानते हैं। इसी के चलते बन्दा परास्त हो गया। वीर बन्दा बहादुर को इस्लाम में मतान्तरित होने के लिए मुगल फरमान जारी हुआ। वीर बन्दा बहादुर व उनके सैनिकों ने इस फरमान की धज्जियां उड़ा दीं, मरना स्वीकार है पर इस्लाम में मतांतरित होना नहीं। ❖

समरस समाज के बिना अन्त्योदय सम्भव नहीं

-प्रो.चिंतामणि मालवीय

भारतीय तत्वज्ञान समरसता और एकत्व का प्रथम उद्घोषक रहा है। आदि ग्रंथ ऋग्वेद की ऋचा संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।। ऋग्वेद 10-191-2 समरसता की समाज की उद्घोषणा ही है। इसी प्रकार कठोपनिषद-कृष्ण यजुर्वेद के मन्त्र।। सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवाव है। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।19।। आगे बढ़ने कि अनिवार्य शर्त ही कही गई है। अद्वैत वेदांत एकात्मता का श्रेष्ठतम उदाहरण है। जो मनुष्य को ब्रह्म होने का अधिकार देता है। वे कहते हैं ब्रह्म सत्य-जगन्मिथ्या यानी की समस्त जगत परमार्थिक रुप से असत् है केवल ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है। जगत की व्यावहारिक सत्ता है, लेकिन मूल तत्व तो केवल एक मात्र ब्रह्म ही है। जैसे चंद्रमा की छवि अलग-अलग जल पात्रों में अलग-अलग दिखती है वैसे ही एक ही ब्रह्म हम सब में, जीव जगत में भिन्न भिन्न परिलक्षित होता है। अलग-अलग मानना अविद्या है अज्ञान है। ब्रह्म और जीव एकत्व बोध ही मोक्ष है, मुक्ति है। जब वेदांत कहता है कि अहम् ब्रह्मास्मि तो इसका अर्थ केवल यह नहीं है कि मैं ही ब्रह्म हूं। वो आगे कहता है तत्वमसि तुम भी वही हो। समस्त जीव-जगत में एकत्व व समरसता का इससे श्रेष्ठ कोई उदाहरण नहीं हो सकता। मध्यकालीन संतों ने भी इसी धारा को अपना दर्शन कहा है।

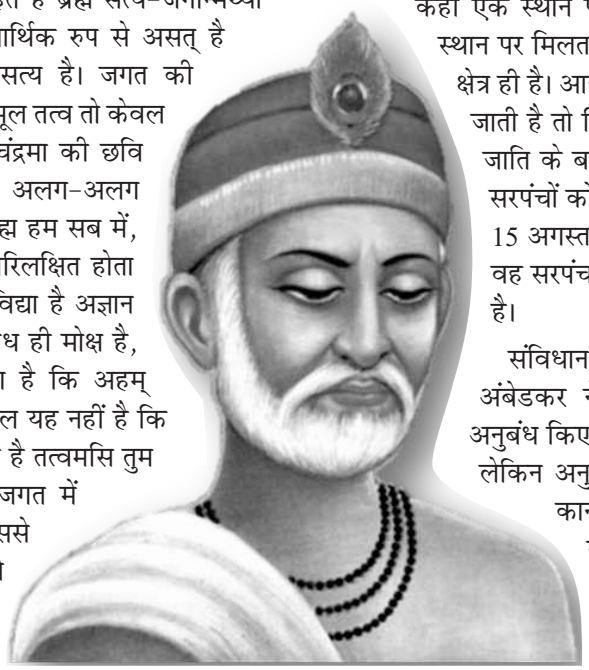

कबीर जब कहते हैं कि- 'एक बूँद एक मल-मूत्र, एक चांम एक गूदा। एक जोति थैं सब उतपना, कौन बाम्हन कौन सूदा'। या जब वे कहते हैं- 'जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं। प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाहिं'। तो ये अद्वैत की ही अभिव्यक्ति है। तुलसी सियाराम मय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी में भी कबीर की बात की ही बात करते हैं। आधुनिक युग में स्वामी विवेकानंद ने नव-वेदांत के आधार पर छुआछूत, भेदभाव, गरीबी, अंधविश्वास जैसी समस्त कुरीतियों को दूर करने का काम किया है। गांधी जी और बाबा साहब अंबेडकर ने भी एकता के प्रयास किए हैं किंतु फिर भी समाज में जाति-भेद फैला पड़ा है। हमारे मूल शास्त्रों में तो समरसता और एकात्मता की प्रतिबद्ध उद्घोषणा है। लेकिन हमारे सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में इसका आज भी अभाव है। असली समरसता यही है कि सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन में हमारा तत्वज्ञान परिलक्षित हो।

यह सही है कि आज भी गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, अनिश्चितता बेरोजगारी, निम्न जीवन स्तर कहीं एक स्थान पर घनीभूत है, कही एक ही स्थान पर मिलता है तो अनुसूचित जाति बहुल क्षेत्र ही है। आज भी गांव में यदि बारात रोकी जाती है तो निश्चित रुप से वह अनुसूचित जाति के बन्धु की ही होती है और कहीं सरपंचों को संबंधित पंचायत सचिव यदि 15 अगस्त पर झंडा नहीं फहराने देता तो वह सरपंच अनुसूचित जाति का ही होता है।

संविधान में स्वयं बाबा साहब अंबेडकर ने समानता के लिए पर्याप्त अनुबंध किए हैं। अन्य कानून भी बनाए हैं, लेकिन अनुभव यह बताते हैं कि केवल कानून से समरस समाज की स्थापना नही हो सकती। केवल समानता पर्याप्त नही समरसता रही तो समानता सहज ही अपने आप पीछे चली आएगी । कानून नहीं। कानून नियम तो बना सकता है, मन नहीं बना सकता । कानून दिशा दर्शन कर सकता है लेकिन व्यवहार में लाने का काम मन ही करता है। कानून स्वीकार्य तभी होता है जब लोगों का मन तैयार हो। समरसता मन की स्वीकार्यता है इसलिए यह समता के भी आगे की संकल्पना है।

समरसता और सामाजिक न्याय में भी अंतर है। सामाजिक न्याय कानूनी स्वरूप का है इसमें शक्ति प्रदर्शन व दबाव का अहसास होता है। यह एक प्रकार की जबरदस्ती है। सामाजिक न्याय में दलित अस्तित्व बना रहता है व

अपनी अलग पहचान पर बल देता है। उसे मिलाता नहीं। यह केवल सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में समानता की घोषणा करता है। इस प्रकार यह सामाजिक स्वरूप का है। लेकिन समरसता एक प्रकार का एकात्म है इसमें ध्वनित होता है कि वंचित वर्ग हमारे अंग हैं। समरसता सामाजिक व आर्थिक परिसीमा को समेटते हुए धार्मिक स्वभाव की है। इसमें भातृत्व भाव की अपेक्षा है।

डॉ. अंबेडकर का नारा था स्वतंत्रता समानता, भ्रातृत्व कानून व अपने संघर्ष के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता व समानता तो दे दी भातृत्व न दे सके क्योंकि भ्रातृत्व अंदर से आता है। इसलिए समरसता समानता और सामाजिक न्याय से ज्यादा विस्तारित व श्रेष्ठ है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की संकल्पना सामाजिक समरसता का आर्थिक पक्ष है। दीनदयाल जी अपने दर्शन में कहते हैं मनुष्य के कर्म की संभावित प्रेरणा करना आत्यंतिक यह सुख की कामना है। लेकिन यह सुख केवल शरीर का सुख नहीं वरन मन बुद्धि और आत्मा का भी होना चाहिए। समग्र और संपूर्ण होना चाहिए। समरसता में शरीर मन बुद्धि और आत्मा चारों सुखों का समावेश है। उन्होंने बताया कि यह आत्यंतिक सुख तभी प्राप्त हो सकता है जब समाज में हम परस्पर पूरक बने। समाज का एक धड़ा उपेक्षित और वंचित हो भूखा और बीमार हो तो हमें भी आदर्श सुख प्राप्त नहीं हो सकेगा।

ब्लू व्हेल पर स्कूल प्रबंधन सतर्क

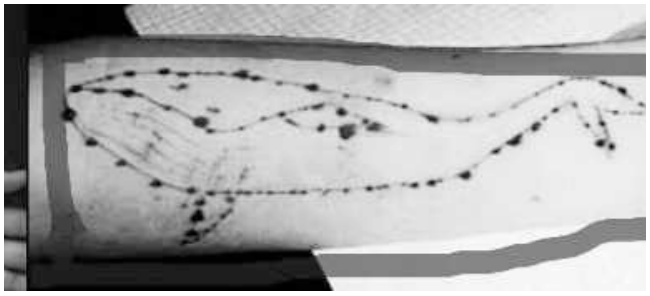

हिमाचल में भी ब्लू व्हेल की घटनाएं घटित होने पर शहर के स्कूलों में ब्लू व्हेल को लेकर प्रबंधन अलर्ट हो गया है। शहर के डीएवी न्यू शिमला डीएवी लक्कड़ बाजार, बच्चों की काउंसलिंग सहित सभी स्कूल अधिकांश स्कूलों की कर रहे हैं। प्रदेश के काउंसलिंग की जा इस संबंध में बच्चों को इंटरनेट के रही है। स्कूल प्रबंधन के बारे में जागरूक अच्छे और बुरे प्रभावों कर रहे हैं। केंद्रीय विद्यालय में स्कूल में सुबह आने वाले बच्चों की गेट पर स्कूल के प्रिंसिपल सहित स्टाफ में अध्यापिकाएं छात्राओं की ओर अध्यापक छात्र की चेकिंग कर रहे हैं। इसमें स्कूल के बच्चों की बाजू चेक की जा रही हैं, कहीं कोई निशान तो नहीं है। बैग में मोबाइल की चेकिंग की जा रही है कि बच्चे मोबाइल लेकर स्कूल तो नहीं पहुंचे है। स्कूल में ऐसा कोई मामला तो नहीं आया है लेकिन स्कूल सुरक्षा की दृष्टि से स्कूल के अंदर आने जाने वाले की चेकिंग कर रहा है। इसके साथ बच्चों की कॉपियां चेक की जा रही हैं। अभिभावकों से अपील की गई है कि बच्चों को मोबाइल न दें। पुलिस के मुताबिक अभिभावक किसी भी बदलाव को पहचान लें, जो कि अवसाद या किसी अन्य मानसिक समस्या को इंगित कर सकते हैं। बच्चे के पाठ संदेश, कॉल लॉग, खोज इतिहास, स्कूल नोट की किताबें, फेसबुक के माध्यम से संचार, स्नैप चैट, व्हाट्सएप आदि दें और नजर रखें। इंटरनेट पर खतरनाक गेम के बारे में उनके साथ नियमित रूप से बातचीत करें। प्रदेश में ब्लू व्हेल से बच्चों को बचाने के लिए हिमाचल पुलिस ने प्रेजेंटेशन तैयार की है। इस प्रेजेंटेशन के माध्यम से स्कूलों में बच्चों को ब्लू व्हेल के खतरे से जागरूक किया जाएगा। डीजीपी ने शुक्रवार को सभी जिलों के एसपी को ब्लू व्हेल को लेकर प्रेजेंटेशन भेजी है। डीजीपी सोमेश गोयल ने सभी पुलिस प्रमुखों को इस प्रेजेंटेशन को शिक्षा विभाग के माध्यम से स्कूलों में दिखाने के निर्देश दिए हैं। प्रेजेंटेशन में ब्लू व्हेल के खतरों को जानकारी दी गई है। अभिभावकों को किन-किन बातों को ख्याल रखना है, इसके बारे में बताया गया है। डीजीपी ने एसपी को निर्देश दिए हैं कि अपने जिलों में स्कूली छात्रों, उनके अभिभावकों को जागरूक करें। **साभार: दैनिक भास्कर**

बाण स्तंभ से दक्षिण ध्रुव तक 'इतिहास' चमत्कारी

इसको खोजते-खोजते कभी-कभी हम ऐसी स्थिति में आ जाते हैं कि आश्चर्य होने लगता है, यह सब कैसे संभव है...?' डेढ़ हजार वर्ष पहले इतना प्रगति और अत्याधुनिक ज्ञान हम भारतीयों के पास था, इस पर विश्वास ही नहीं होता...!

सोमनाथ मंदिर का इतिहास बड़ा ही विलक्षण और गौरवशाली रहा है। 12 ज्योतिर्लिंग है सोमनाथ..! एक वैभवशाली, सुंदर शिवलिंग...!! इतना समृद्ध कि उत्तर-पश्चिम से आने वाले प्रत्येक आक्रांता की पहली नजर सोमनाथ पर जाती थी। अनेकों बार सोमनाथ मंदिर पर हमले हुए। उसे लूटा गया। सोना, चांदी, हीरा, माणिक, मोती आदि गाड़ियां भर-भर कर आक्रांता ले गए। इतनी संपत्ति लुटने के बाद भी हर बार सोमनाथ का शिवालय उसी वैभव के साथ खड़ा रहता था। लेकिन केवल इस वैभव के कारण ही सोमनाथ का महत्व नहीं है। सोमनाथ का मंदिर भारत के पश्चिम समुद्र तट पर हैं। विशाल अरब सागर रोज भगवान सोमनाथ के चरण पखारता है और गत हजारों वर्षों के ज्ञान इतिहास में इस अरब सागर ने कभी भी अपनी मर्यादा नहीं लांघी हैं। न जाने कितने आंधी-तूफान आए, चक्रवात आए लेकिन किसी भी आंधी-तूफान, चक्रवात से मंदिर की कोई हानि नहीं हुई है। इस मंदिर के प्रांगण में एक स्तंभ (खंबा) हैं यह 'बाण स्तंभ' नाम से जाना जाता है। यह स्तंभ कब से वहां पर हैं बता पाना कठिन है। लगभग छठी शताब्दी से इस बाण स्तंभ का इतिहास में नाम आता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि बाण स्तंभ का निर्माण छठे शतक में हुआ है। उसके सैकड़ों वर्ष पहले इसका निर्माण हुआ होगा। यह एक दिशादर्शक स्तंभ है, जिस पर समुद्र की ओर इंगित करता एक बाण हैं। इस बाण स्तंभ पर लिखा है-

'आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव पर्यंत
अबाधित ज्योतिरमार्ग'...

इसका अर्थ यह हुआ - 'इस बिंदु से दक्षिण ध्रुव तक सीधी रेखा में एक भी अवरोध नहीं हैं।' अर्थात 'इस मार्ग में जमीन का एक भी टुकड़ा नहीं हैं।' जब मैंने पहली बार इस स्तंभ को देखा और यह शिलालेख पढ़ा, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। यह ज्ञान इतने वर्षों पहले हम भारतीयों को था...? कैसे संथव हैं...? और यदि यह सच हैं, तो कितने समृद्धशाली ज्ञान की वैश्विक धरोहर हम संजोये हैं...! संस्कृत में लिखे हुए इस पंक्ति के अर्थ में अनेक गूढ़ अर्थ समाहित हैं। इस पंक्ति का सरल अर्थ यह हैं कि 'सोमनाथ मंदिर के उस बिंदु से लेकर दक्षिण ध्रुव तक (अर्थात अंटार्टिका तक), एक सीधी रेखा खिंची जाए तो बीच में एक भी भूखंड नहीं आता हैं।' क्या यह सच है...? आज के इस तंत्र विज्ञान के युग में यह ढूंढना संभव तो है, लेकिन उतना आसान नहीं। गूगल मैप में ढूंढने के बाद भूखंड नहीं दिखता है, लेकिन वह बड़ा भूखंड। छोटे-छोटे भूखंडों को देखने के लिए मैप को 'एनलार्ज' या 'जूम' करते हुए आगे जाना पड़ता है। वैसे तो यह बड़ा ही 'बोरिंग' सा काम है। लेकिन धीरज रखकर धीरे-धीरे देखते गए तो रास्ते में एक भी भूखंड (अर्थात् 10 किलोमीटर से बड़ा भूखंड या उससे छोटा भूखंड) पकड़ा में नहीं आता है। अर्थात् हम मान कर चलें कि उस संस्कृत श्लोक में सत्यता है। किन्तु फिर भी मूल प्रश्न वैसा ही रहता है। अगर मान कर भी चलते है कि सन् 600 में इस बाण स्तंभ का निर्माण हुआ था, तो भी उस जमाने में पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव है, यह ज्ञान हमारे पुरखों के पास कहां से आया..? अच्छा, दक्षिण ध्रुव ज्ञात था यह मान भी लिया तो भी सोमनाथ मंदिर से दक्षिण ध्रुव तक सीधी रेखा में एक भी भूखंड नहीं आता है, यह 'मैपिंग' किसने किया...? कैसे किया....? सब कुछ अद्‌भुत...!!

इसका अर्थ यह है कि 'बाण स्तंभ' के निर्माण काल में भारतीयों को पृथ्वी गोल है, इसका ज्ञान था। इतना ही नहीं,

पृथ्वी का दक्षिण ध्रुव है (अर्थात उत्तर ध्रुव भी है) यह भी ज्ञान था। यह कैसे संभव हुआ...? इसके लिए पृथ्वी का 'एरिअल व्यू' लेने का कोई साधन उपलब्ध था...? अथवा पृथ्वी का विकसित नक्शा बना था...? नक्शे बनाने का एक शास्त्र होता है। अंग्रेजी में इसे 'कार्टोग्राफी' (यह मूलत: फ्रेंच शब्द हैं।) कहते हैं। यह प्राचीन शास्त्र है। ईसा से पहले छह से आठ हजार वर्ष पूर्व की गुफाओं में आकाश के ग्रह तारों के नक्शे मिले थे। परन्तु पृत्वी का पहला नक्शा किसने बनाया इस पर एकमत नहीं है। हमारे भारतीय ज्ञान का कोई सबूत न मिलने के कारण यह सम्मान 'एनेक्झिमेंडर' नामक ग्रीक वैज्ञानिक को दिया जाता है। इनका कालखंड ईसा पूर्व 611 से 546 वर्ष था। किन्तु इन्होंने बनाया हुआ नक्शा अत्यंत प्राथमिक अवस्था में था। उस कालखंड में जहां-जहां मनुष्यों की बसाहट का ज्ञान था, बस वही हिस्सा नक्शे में दिखाया गया है। इसलिए उस नक्शे में उत्तर और दक्षिण ध्रुव दिखाने का कोई कारण ही नहीं था। आज की दुनिया के वास्तविक रूप के करीब जाने वाला नक्शा 'हेनरिक्स मार्टेलस' ने साधारणत: सन् 1940 के आसपास तैयार किया था। ऐसा माना जाता है कि कोलंबस ने इसी नक्शे के आधार पर अपना समुद्री सफर तय किया था। 'पृथ्वी गोल है' इस प्रकार का विचार यूरोप के कुछ वैज्ञानिकों ने व्यक्त किया था। 'एनेक्सिमेंडर' ईसा पूर्व 600 वर्ष, पृथ्वी को सिलेंडर के रूप में माना था। 'एरिस्टोटल' (ईसा पूर्व 384-ईसा पूर्व 322) ने भी पृथ्वी को गोल माना था। लेकिन भारत में यह ज्ञान बहुत प्राचीन समय से था, जिसके प्रमाण भी मिलते हैं। इसी ज्ञान के आधार पर आगे चलकर आर्यभट्ट ने सन् 500 के आस-पास इस गोल पृथ्वी का व्यास 4,967 योजन हैं (अर्थात नए मापदंडों के अनुसार 39,968 किलोमीटर है) यह भी दृढ़तापूर्वक बताया। आज की अत्याधुनिक तकनीक की सहायता से पृथ्वी का व्यास 40,075 किलोमीटर माना गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि आर्यभट्ट के आकलन में मात्र 0.26% का अंतर आ रहा है, जो नाममात्र है....! लगभग डेढ़ हजार वर्ष पहले आर्यभट्ट के पास यह ज्ञान कहां से आया... सन् 2008 में जर्मनी के विख्यात इतिहासविद् जोसेफ श्वार्ट्सबर्ग ने यह साबित कर दिया कि ईसा पूर्व दो-ढाई हजार वर्ष, भारत में नक्शा शास्त्र अत्यंत विकसित था। नगर रचना के नक्शे उस समय उपलब्ध तो थे ही, परन्तु नौकायन के लिए आवश्यक नक्शे भी उपलब्ध थें भारत में नौकायन शास्त्र प्राचीन काल से विकसित था। संपूर्ण दक्षिण एशिया में जिस प्रकार से हिन्दू संस्कृति के चिन्ह पग-पग पर दिखते हैं, उससे यह ज्ञात होता है कि भारत के जहाज पूर्व दिशा में जावा, सुमात्रा, यवद्वीप को पार कर के जापान तक प्रवास कर के आते थे। सन् 1955 में गुजरात के 'लोथल' में ढाई हजार वर्ष पूर्व के अवशेष मिले हैं। इसमें भारत की प्रगति में नौकायन के अनेक प्रमाण मिलते हैं। सोमनाथ मंदिर के निर्माण काल में दक्षिण ध्रुव तक दिशा दर्शन, उस समय के भारतीयों को था यह निश्चित है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि दक्षिण ध्रुव तक सीधी रेखा में समुद्र में कोई अवरोध क्यों नहीं हैं? ऐसा बाद में खोज निकाला गया या दक्षिण ध्रुव से भारत के पश्चिम तट पर, बिना अवरोध के सीधी रेखा जहां मिलती हैं, वहां पहला ज्योतिर्लिंग स्थापित किया...? उस बाण स्तंभ पर लिखी गई उन पंक्तियों में, ('आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव पर्यंत, अबाधित ज्योतिरमार्ग...') जिसका उल्लेख किया गया है, वह 'ज्योतिरमार्ग' क्या है...? यह आज भी प्रश्न ही है..! ❖ **साभार: यथावत**

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,

DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

दीपावली

पांच पर्वों का पर्व दीपावली,
कराती हमें गर्व दीपावली।
खुशियों का लगता श्रृंगार,
मिठाइयों की हो भरमार।
फूलझड़ियां पटाखे चलते,
चम-चम भी हैं दीपक करते।
लक्ष्मी-पूजा घर-घर होती,
उजाला करती दीप ज्योति।
युग-युगों का जुड़ा इतिहास,
पर्व प्यारा आता रास।
इससे जुड़े कई प्रसंग,
सुनकर बच्चे रहते दंग।
घर-घर होती बड़ी सफाई,
एक-दूसरे को दें बधाई।
दीपावली पर्व बड़ा मनोहर,
समझो इसे संस्कृति-धरोहर।
लक्ष्मी-अर्चन व गणेश-वन्दन,
कर जाए भारत का जन-जन।
खील-खिलौने और मिठाई,
बांटे 'प्रसाद' खुश हो भाई। ❖

दीपक

सुन्दर दीपक मनहर दीपक,
लौ विखेरे रात भर दीपक।
कितना उज्ज्वल करता झिलमिल,
पर हित जलता यह तो तिल-तिल।
घृणा-द्वेष यह न जाने,
प्रेम-कथा यह खूब बखाने।
इसकी शिखा लगती प्यारी,
कली-सी सुन्दर बड़ी न्यारी।
राग-द्वेष भाव न जाने,
गाए यह तो प्रेम-तराने।
यह तो सचमुच ज्ञान-प्रतीक,
अज्ञाननाशक बात है ठीक।
शुचिता-सत्यता इसके अन्दर,
देहरी-द्वार, मसीत मन्दिर।
प्रकाश-बांट हर्ष मनाता,
स्नेहल-दीप सब मन भाता।
नवल आशा नूतन संकल्प,
इसका नहीं कोई विकल्प।
करे उजाला तमस मिटाकर,
'प्रसाद' .....जी भर कर।

रामप्रसाद शर्मा 'प्रसाद'
सिहाल (कांगड़ा) हि.प्र. ❖

किताबें

मेरे मन को बहुत भाती हैं किताबें
मन में नया उत्साह जगाती हैं
कई रंग ,आकारों में होती हैं
जिंदगी का रंग मंच रचती हैं
मानव की सच्ची दोस्त होती हैं किताबें
मेरे मन को बहुत भाती हैं किताबें
अतीत से अवगत करवाती हैं
राजनीति का आईन दिखाती हैं
हमारी भूलों का अहसास करवाती हैं
गलतियों से अवगत करवाती हैं
ढेर सारा ज्ञान अपने अन्दर संजो, हैं किताबें
हमें मंजिल तक पहुँचाती हैं किताबें
मेरे मन को बहुत भाती हें किताबें
कभी उदास ,अकेला नहीं होने देती
टूटती उम्मीदों को साहस से भर देती हैं
न,- न, जोहा जगाती हैं
हमें जिंदगी जीना सिखाती हैं
माँ सरस्बती की अनुभूति होती हैं
कभी छोड़ कर नहीं जाती हैं किताबें
मेरे मन को बहुत भाती हैं किताबें ❖

सुषमा देवी
भरमाड कांगड़ा

पाप

पाप का न कोई बाप,
न कोई माँ,
न रिश्ते न नाते।
पाप पीक सा पनपता है,
पगता है,
फूटता है,
बिखेरता है गन्दी मवाद।
पाप साँप सा सरकता है,
अज़गर की तरह निगलता है
निर्दोष जीवन
पाप पीछे छोड़ता है
शर्म सन्नाटा, दुख, अफसोस।
पाप से नजदीकी बुरी,
पाप से दूरी ही भली,
पाप झुकवाता शर्म से नाक,
पाप करवाता जमकर विलाप। ❖

कश्मीर सिह
रजेरा चम्बा हि0 प्र0

स्वास्थ्य

यदि सरसों के तेल में, पग नाखून डुबाय,
खुजली, लाली, जलन सब, नैनों से गुमि जाय।
आलू का रस अरू शहद, हल्दी पीस लगाव,
अल्प समय में ठीक हों, जलन, फंफोले, घाव।।
भोजन करके जोहिए, केवल घेटा डेढ़,
पानी इसके बाद पी, ये औषधि का पेड़।
जो भोजन के साथ ही, पीता रहता नीर,
रोग एक सौ तीन हो, फुट जाए तकदी।।
पानी करके गुनगुना, मेथी देव भिगाय,
सुबह चबाकर नीर पी, रक्तचाप सुधराय। ❖

विचौलियों से पस्त होते सेब बागवान

- सुरेन्द्र कुमार

देश के पहाड़ी राज्य हिमाचल की देवभूमि में वास्तविक रूप से सेब की खेती सन् 1918 ईस्वी से शुरू हुई जब सैमुअल इवान्स स्टोक्स यानी सत्यानंद स्टोक्स ने अमेरिका से लाकर कोटगढ में सेब की मीठी किस्म उगाई। सेब की खेती में इस सफलता को पाकर उन्होंने स्थानीय लोगों को पौधे बाँटने के साथ उन्हें सेब के बाग उगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जो देव भूमि के मेहनती एवं सादे वासियों को एक बड़ी सौगात थी। राज्य का सेब आज देश के साथ-साथ विश्व में भी प्रसिद्ध होता जा रहा है जो पहाड़ी राज्य में बसने वाले परिश्रमी बागवानों को सुखद एहसास की अनुभूति करवाता है।

देवभूमि के मुख्य सेब उत्पादक जिलों में शिमला, कुल्लू, किन्नौर, मण्डी का नाम लिया जाता है तथा चम्बा, सिरमौर, लाहौल स्पिति इत्यादि में सेब की जड़ें तेजी से फैल रही हैं। आजकल हिमाचल के निचले एवं मध्यम उंचाई वाले इलाकों का सेब सीजन समाप्त तथा उच्च क्षेत्रों का सीजन शुरू हो रहा है। सेब खरीदने में विचौलियों का बढ़ता प्रभुत्व है। उक्त विचौलियों एवं ठगों का जाल प्रदेश के प्रमुख सेब इलाकों सिराज, करसोग, माहुंनाग, रामपुर, कोटखाई, रोहडू, ठियोग, कुल्लू, आनी, बंजार, निरमण्ड़ के साथ-साथ किन्नौर में सांगला से ज्यूरी तक फैला हुआ है। वैसे तो प्रदेश के ग्रोअर दिन प्रतिदिन जागरूक हो रहे हैं परंतु कुछ निर्दोष बागवान इन चतुर ठगों के झांसे में फंस ही जाते हैं। हद तो तब होती है जब उक्त ठग सेब खरीदने के बाद दो दिन में पैसा देने का वादा करके सदा के लिए रफू चक्कर हो जाते हैं जिसके चलते कई बार सेब मालिकों को हाथ मलते देखा गया है। प्रदेश का बागवान अपने पौधों को दिन रात कड़ी मेहनत करके फसल देने लायक बना रहे हैं परंतु फसल लगने पर मलाई आढ़ती और लदानी के साथ बिचौलिये मार लेते हैं। जबकि मालिकों को सेब की मामूली कीमत ही मिल पाती है। इसी प्रकार बागवान आए दिन शिमला, परमाणु, चंडीगढ़ और दिल्ली की फल मंडियों में भी लूटे जा रहे हैं। मंडियों में बैठे आढ़तियों के एजेंट अपनी चिकनी-चुपडी बातों में उलझा कर बागवानों को अपने यहाँ माल बेचने को विवश कर देते हैं तथा जब पैसे वसूलने की बारी आती तो उक्त एजेंट चाहितों को छोड़ अन्य से भारी भरकम कमीशन काटकर ग्रोअरों को नाम मात्र ही अदा करते हैं। एक सच्चाई यह भी है कि सेब खरीददार सेब खरीदते समय फल की रंगत को प्रमुखता से तरजीह देते हैं जिसके चलते बागवान अपने बगीचों में तरह-तरह के स्प्रे का छिडकाव करते हैं। ऐसा करने से फल में रंग तो खूब जमता है परंतु स्वाद एवं पौष्टिकता बिगड़ जाती है। इसके विपरीत सेब का अंतिम उपभोग बेहतरीन स्वाद के लिए किया जाता है। विडम्बना देखिए सब कुछ ज्ञात होने पर भी बागवान दिखावे व आडंबर के चलते ऐसा करने को मजबूर हैं। जो वर्तमान समय में एक गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है। इसके अलावा सेब एक नाजुक फल है जिसके कारण फल व पौधो में विभिन्न रोगों के पनपने का खतरा बना रहता है। इनकी रोकथाम के लिए बागवान समय-समय पर अनेकों रासायनिक दवाओं एवं कीटनाशकों का छिड़काव करते हैं। अब यदि बागवानो के प्रति सरकारी रवैये की बात की जाए तो छुटपुट प्रयासों को छोड़ सेब के ग्रोअरों को अधिकतर सरकार की बेरूखी ही सहन करनी पड़ती है। जिसके चलते आज सेब का न्यूनतम समर्थन मूल्य काफी कम, विपणन में खामियां, विभिन्न टैक्स वसूली, मंडियों में बिचौलियों का बढ़ता प्रभाव, ढुलाई में मनमानी, मनचाहा कॉर्टन का रेट, सीजन में सड़कों की खस्ताहाल, ब्लैंक चौक की समस्या,उच्च कीमत पर घटिया पौधों की उपलब्धता इत्यादि प्रदेश के सेब उत्पादकों की कमर तोड़ रहे है।

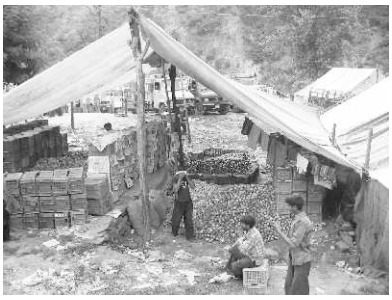

अत: सरकार को चाहिए कि सेब बागवानी की ओर विशेष ध्यान देकर इसे उन्नत तरीकों से प्रोत्साहित करने के लिए उचित प्रावधान किए जाएँ। जिससे सेब उत्पादन में वृद्धि के साथ आय में भी बढ़ोतरी होगी। आज सरकार को सेब बिक्री की उचित व्यवस्था, लेन-देन में पारदर्शिता, सड़कों का बेहतर रखरखाव, फल की चमक के बजाय स्वादिष्टता की ओर ध्यान, कीटनाशकों एवं रासायनिक खाद का कम उपयोग, समय-समय पर सेब की खेती पर कार्यशाला का आयोजन इत्यादि बिंदुओं पर विशेष ध्यान देकर इन्हें लागू करने को कड़े नियम बनाने होंगे। जिससे प्रदेश की बागवानी में चार चांद लग सकते है। यही मेरी मनोकामना है। ❖

जानलेवा रोग स्वाइन फ्लू

-डॉ. शीतल वर्मा

स्वाइन फ्लू क्या है?

स्वाइन फ्लू, जिसे एच1 एन1 विषाणु भी कहा जाता है, एक इन्फ्लूएंजा वायरस का अपेक्षाकृत नया विषाणु है। जो नियमित फ्लू के लक्षणों का कारण बनता है। एच1एन1 एक श्वसन रोग है जो सूअरों के श्वसन तंत्र को संक्रमित करता है। यह भी इंसानों को प्रेषित हो जाता है।

स्वाइन फ्लू के लक्षण?

स्वाइन फ्लू के लक्षण इन्फ्लूएंजा संक्रमण के समान हैं: बुखार, खांसी, नाक स्त्राव, थकान और सिरदर्द। अन्य लक्षण हो सकते हैं- ठंड लगना, गले में खराश, दस्त, मतली और उल्टी। वयस्कों में स्वाइन फ्लू के लिए संक्रामक अवधि आम तौर पर एक दिन पहले एक वयस्क के लक्षण विकसित होती है और यह बीमार होने के लगभग पांच से सात दिनों तक रहता है हालांकि, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली और बच्चों वाले लोग लंबे समय तक (उदाहरण के लिए, लगभग 10 से 14 दिन) संक्रामक हो सकते हैं। एक सरल छींक से हजारों रोगाणु हवा में फैल सकते हैं। रोग लार और बलगम कणों के माध्यम से फैलता है। छींक आने, खांसी, आच्छादित सतह को स्पर्श की वजह से भी रोग फैलता है।

स्वाइन फ्लू कब तक खत्म होता है?

स्वाइन फ्लू आम तौर पर तीन से सात दिनों के बाद कम होना शुरू हो जाता है, लेकिन कुछ रोगियों में बीमारी और खांसी दो सप्ताह या उससे अधिक जारी रह सकती है। गंभीर स्वाइन फ्लू के लिए अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता होती है जो संक्रमण के समय की लंबाई 9 से 10 दिन तक बढ़ जाती है।

स्वाइन फ्लू का इलाज?

स्वाइन फ्लू के अधिकांश मामलों में उपचार के लिए दवा की आवश्यकता नहीं होती है। यदि जटिलताएं हैं तो फिर परीक्षण के लिए डॉक्टर पास जाएं। अन्यथा आपको डॉक्टर को दिखाने की जरूरत नहीं है। स्वाइन फ्लू के लक्षणों के प्रबंधन के तीरके नियमित फ्लू के समान हैं। खूब आराम करो। निर्जलीकरण को रोकने के लिए बहुत सारे पानी और अन्य तरल पदार्थों का सेवन करें। सूप और रस आपके शरीर के खोए हुए पोषक तत्वों की भरपाई करने में मदद करेगा। सिरदर्द और गले में जलन जैसे लक्षणों के लिए ओवर-द-काउंटर दर्द निवारक दवाएं से राहत प्राप्त करें।

स्वाइन फ्लू के लिए परीक्षण?

आपके चिवकित्सक आपके शरीर से तरल पदार्थ का नमूना प्राप्त करके निदान कर सकते हैं नमूना लेने के लिए, आपका डॉक्टर या नर्स आपकी नाक या गले को छू सकती है। विशिष्ट प्रकार के वायरस की पहचान करने के लिए विभिन्न आनुवांशिक और प्रयोगशाला तकनीकों का उपयोग करके स्वाब का विश्लेषण किया जाएगा।

स्वाइन फ्लू की रोकथाम?

स्वाइन फ्लू को रोकने का सबसे अच्छा तरीका एक सालाना फ्लू टीकाकरण प्राप्त करना है। स्वाइन फ्लू को रोकने के अन्य आसान तरीके जिसमें शामिल हैं: अक्सर साबुन या हाथ सेनेटिवेटर के साथ हाथ धोना है, अपनी नाक, मुंह या आंखों को छूने से बचें (वायरस टेलीफोन और टेबलेट की सतहों पर जीवित रह सकते हैं। यदि आप बीमार हैं तो काम पर न जाएं या स्कूल से घर में रहना ठीक है। स्वाइन फ्लू के मौसम में बड़े सम्मेलनों में जाने से बचें। स्वाइन फ्लू से निपटने का सबसे अच्छा साधन वायरस के प्रयास को रोकने के लिए हाथ से स्वच्छीकरण महत्वपूर्ण है। संक्रमित लोगों से दूर रहना व्यक्ति-से-व्यक्ति संचरण को रोकने में मदद करेगा। ❖ **सहायक प्रोफेसर माइक्रोबायोलॉजी विभाग, के.जी.एम.यू. लखनऊ**

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी - पुष्प 12

दीनदयाल जी का जन्म 1916 में हुआ- जन्म शताब्दी पर गत 11 महीने प्रत्येक मास के पहले सप्ताह में कुछ सामग्री आपको प्रेषित की गई उनकी जन्म शताब्दी का यह अन्तिम और समापन मास है। माननीय अशोक जी बेरी के निर्देशन पर यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, इसका समाधान है। उनके स्वर्गवास पर वृन्दावन के उद्भट विद्वान श्री शरण बिहारी गोस्वामी ने एक भावपूर्ण कविता लिखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उस कविता को स्वर दिया माननीय अशोक जी सिंहल ने। समापन किस्त पर उस कविता से अच्छा कुछ भी नहीं लग रहा। सभी के लाभ के लिए वह कविता प्रेषित है।

माता के मस्तक को ज्योतिर्मय कर गया

- श्री शरण बिहारी गोस्वामी स्वर : श्री अशोक सिंहल

भारत के भाल पर
कुमकुम के साथ लगा
अक्षत एक
असमय ही झर गया।
माता के मस्तक को
ज्योतिर्मय कर गया।
वह गुलाब जन्मा जो
मथुरा के कछार में
पंखुड़ियाँ खिलीं
गन्ध बिखरी बहार में।
सुरभि का वामन वह
कीर्ति के चरणों से
व्योम का सूनापन
आस्था से भर गया ।।1।।
ग्राम ग्राम नगर नगर
बज उठा संघ शंख
राष्ट्र का विवेकी हंस जागा
दिए खोल पंख।
फिर से वह शंकर सा
दिग्विजयी ज्योति दूत
धाम से अनंत मठ
अर्चन के गढ़ गया।

कोने से कोने तक
राष्ट्र भाव भर गया ।।2।।
हम हुए स्वतंत्र
किन्तु देश था बँटा हुआ
तम का था घेरा किन्तु
चन्द्र था कटा हुआ।
दीपक सा जागा एक
ज्योति पुरुष स्नेह भरा
अपने से असंख्य दीप
और नये भर गया।
अर्चन की थाली में
कपूर सा उड़ गया ।।3।।
मुक्त देश किन्तु बढ़ी
निर्धनता दीनता
टुकड़ों पर बिकने लगी
मानवता अस्मिता।
झोंपड़ियां गरीब हुईं
महलों में होड़ लगी
तब वह मनु नया
अर्थशास्त्र रच गया।
मानव एकात्म मंत्र का
विधान रच गया ।।4।।

जनता की आँखों की
प्रियतम वह रश्मि थी
पाप को न भाया
चुभा शूल सा
वह पुण्यव्रती।
घेरा षड़यन्त्रों ने
सत्य के पुजारी को
रात्रि के अन्धेरे में
बलि पथ पर चढ़ गया।
एक और ईसा फिर
शूली पर चढ़ गया ।।5।।
माता की पूजा का
थाल सज कर तैयार था
धूप दीप पुष्प माल्य,
चन्दन घनसार था।
भक्तगण देख रहे,
माता थी हँसने को
दीप्त भाल अक्षत पर,
असमय ही झर गया ।6।
माता के मस्तक को
ज्योतिर्मय कर गया।

पृष्ठ 9 का शेष ....

भारत के संविधान के अनुसार तो यह अपराध की श्रेणी में माना जाएगा। इसका अर्थ तो यह हुआ कि जम्मू कश्मीर सरकार स्थाई निवासी प्रमाण पत्र के नाम पर स्थाग्र निवासियों से ही भेदभाव नही कर रही बल्कि वह जाति के आधार पर भी भेदभाव कर रही है।

जब पाकिस्तान बना था तो वहाँ की सरकार दलित हिन्दुओं को भारत आने से रोक रही थी। उसकी दलील थी कि इनके चले जाने से पाकिस्तान के नगरों में सफाई का काम कौन करेगा? तब बाबा साहिब आम्बेडकर ने दलित समाज के लोगों से अपील की थी कि वे किसी भी स्थिति में पाकिस्तान में न ठहरें और भारत आ जाएँ। उन्होंने तो यह भी कहा था कि उनमें से यदि कुछ को ज़बरदस्ती मुसलमान भी बना लिया गया है तो वे चिन्ता न करें और आ जाएँ, उन्हें स्वयं ही शुद्ध कर लिया जाएगा। बाबा साहिब ने पंडित जवाहर लाल नेहरु को भी पत्र लिखा था कि वे दलित समाज को पाकिस्तान से वापिस लाने की व्यवस्था करें क्योंकि दलित समाज केवल सफ़ाई कर्मचारियों का काम करने के लिये नही है। आम्बेडकर तो क्या पता था कि उनके आँखें मूँदते ही, जवाहर लाल नेहरु के सक्रिय मार्गदर्शन में ही चलने वाली जम्मू कश्मीर सरकार बाल्मीकियों को धोखे से बुला कर दशकों के लिए केवल स्वीपर का ही काम करने के लिए बाध्य कर देगी। इन प्रकार के अन्यायों के ख़िलाफ़ जब कोग्र ऊँगली उठाता है तो उसके पेट में अनुच्छेद 35A की कटार राज्य सरकार घोंप देती है ।

उत्तर:

1. श्रीमती निर्मला सीतारमण, 2. पीवी सिंधु, 3. रंगी, 4. भारत के वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त, 5.बिलासपुर, 6. सरदार सरोवर बाँध, 7. गुजरात व नर्मदा नदी, 8. दिल्ली, 9. Society of Iindian Automobile Mmanufacturers, 10- सेन्ट्रल गुडस एंड सर्विस व स्टेट गुडस एंड सर्विस टैक्स।

महिला उद्यमिता की पहचान- ज्योत्सना सूरी

इकीसवीं शताब्दी में, महिलाओं ने न सिर्फ धन अर्जन करने में अपनी भूमिका दर्ज कराई है बल्कि भावी संगठनों का निर्माण करते हुए अभिकर्ताओं का स्वरूप भी परिवर्तित किया है। हाल के वर्षों में, महिलाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। विगत तीन दशकों में, महिलाओं ने कॉरपोरेट जगत में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, सामाजिक नैतिकता की बाध्यताओं को पार करते हुए घर तथा कार्यस्थल पर स्वयं को सफल उद्यमी एवं कार्यकारी व्यावसायिकों के रूप में साबित किया है। भारतीय महिला उद्यमी वर्ग ने नए उद्यमों को आरंभ करने एवं उनका सफलतापूर्वक संचालन करने में बेहतर कार्य-निष्पादन के कई उदाहरण प्रस्तुत किए हैं।

मैं इस बात में पूरी आस्था रखती हूं कि किसी भी कार्यदल के नेता के पास लक्ष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण एवं रणनीति बनाने की क्षमता होनी चाहिए तथा लक्ष्य को हासिल करने हेतु कार्यदल को अति सावधानी एवं सतर्कतापूर्वक अपने प्रयासों को मूर्तरूप देने में प्रभावी नेतृत्व करना चाहिए। नेता को पक्षपात रहित एवं धैर्यवान होना चाहिए तथा उसकी क्षमताओं को समझते हुए एवं तदनुसार उत्तरदायित्वों का प्रत्यायोजन करते हुए जन प्रंबंधन कौशल होना चाहिए। उसे अपने दृढ़ लक्ष्यों के प्रति अडिग रहना चाहिए। उसे अपने कर्मचारियों का मनोबल काफी बढ़ाकर रखना चाहिए और संगठन को संकट के भंवर से बाहर निकालना चाहिए।

मैंने हाल ही में फिक्की के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया है और यह पहली बार है कि पर्यटन एवं आतिथ्य सत्कार सेक्टर का प्रतिनिधित्व किया जा रहा है। अध्यक्ष की अपनी मौजूदा हैसियत में, मैं पर्यटन को बढ़-चढ़कर बढ़ावा दे रही हूं। फिक्की में, हम लोग भारतीय उद्योग के संवर्धन हेतु अनेक समारोहों एवं पहलों के आयोजन में व्यस्त हैं। इनमें एक विषय है, जिसके प्रति मेरा कफी आत्मीय जुड़ाव है, महिला उद्यमिता।

अप्रैल 2013 में, फिक्की महिला संगठन एफएलओ ने सभी विषमताओं के विरूद्ध उद्यमिता'' उपाधि प्राप्त 150 महिला उद्यमियों की कहानियों का एक संकलन प्रकाशित किया। ये कहानियां हमें यह बताती हैं कि कैसे इन महिलाओं ने संघर्ष करते हुए, बाधाओं से लड़ते हुए उद्यमिता के जगत, पुरूषों के अधिपत्य वाले उद्यमिता जगत, में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति एवं स्थान दर्ज कराने में सफल हुई हैं। प्रत्येक कहानी महिलाओं के अटूट साहस, दृढ़ प्रतिज्ञा तथा स्त्री शक्ति के उद्भूत सामर्थ्य को सही अर्थों में प्रतिबिम्बित करती है।

10 अक्टूबर, 2006 को, मेरे जीवन में बड़ा भूचाल आ गया जब मेरे पति का स्वर्गवास हो गया। मेरे पति के गुजर जाने के 10 दिनों के भीतर मुझे इस कंपनी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभालना पड़ा। मेरे परिवार के लोग तथा मेरे इस कंपनी के कर्मचारीगण मेरी ओर टकटकी लगाए हुए थे और मुझे उनके लिए एक बड़े उत्तरदायित्व को निभाना था। मैं कार्य में इस कदर व्यस्त हो गई कि मेरे पास विलाप का भी समय नही था। मेरे लिए, प्रत्येक कदम पर सब कुछ नया था और सीखने वाला था। हालांकि आतिथ्य सत्कार की अवधारणाएं हमारे मन-मानस में स्वत: अंतर्निहित होती हैं, लेकिन इस संबंध में अपेक्षित पेशेवर प्रशिक्षण नही था। मैंने काम करते-करते इसे सीखा और अभी भी सीख रही हूं।

मैंने भारत के किसी दूसरे उद्यमी की तरह चुनौतियों का सामना किया और अभी भी सामना कर रही हूं। अब इनका सामना करना तो मेरे लिए अनिवार्य बन गया है। मैंने कभी हार नही मानी है। मेरे धैर्य एवं संयम ने आज मुझे इस मुकाम पर पहुंचाया है जहां से मैं अब समाज को अपनी सेवाएं दे सकती हूं।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का कार्यभार संभालने के बाद मेरे महत्वपूर्ण निर्णयों में 'ललित' ब्रांड नाम से समूह की नई पहचान बनानी थी। ब्रांड का नाम परिवर्तन एक बड़ी कवायद है, हमने इसका नाम बदलने से पहले एक साल तक इस संबंध में कड़ी मेहनत की। चूंकि मेरे पति ने इस व्यवसाय की स्थापना की थी, इस ब्रांड का नया नाम 'ललित' सहज ही सूझ गया। इस कंपनी की क्षमता–दर-क्षमता बढ़ती गई और मेरे कार्यभार संभालने के समय जहां हमारे पास सिर्फ सात ही होटल प्रचालन में थे, आज हमारा नाम भारत के निजी स्वामित्व वाले सबसे बड़े होटल श्रृंखलाओं में शुमार है। ❖ **साभार: इन्टरनेट स्त्री शक्ति**

सेना में अफसर बनी शहीद कर्नल महादिक की पत्नी

जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान के दौरान शहीद हुए सेना के कमांडो कर्नल संतोष महादिक की विधवा पत्नी स्वाति महादिक सेना में अफसर बन गई हैं। पति के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए लैफ्टीनैंट बनी स्वाति ने इस मौके पर कहा कि उनके पति का पहला प्यार उनकी वर्दी और यूनिट थी तो मुझे इसे पहनना ही था। 2 बच्चों की मां स्वाति सर्विस सिलैक्शन बोर्ड (एस.एस.बी.) के सामने हाजिर हुईं। लिखित परीक्षा और साक्षात्कार को पास करते हुए उन्होंने आखिरकार वह मुकाम पा ही लिया जिसके लिए वह जी-जान से जुटी थीं। गौरतलब है कि शहीद महादिक को गणतंत्र दिवस के मौके पर शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था। ❖

जापान के साथ सांस्कृतिक संबंधों का सेतु बनी हिन्दी

जापानी बड़ी संख्या में भगवान बुद्ध की इस भूमि के आकर्षण में बंधकर हिंदी की ओर खींचे चले आ रहे हैं। प्रेमचंद और अज्ञेय की रचनाओं के जापानी में अनुवाद हो रहे हैं। जापान में बनी एनीमेशन फिल्म रामायण दुनिया भर में लोकप्रिय हुई है। हिन्दी में प्रचार-प्रसार के लिए संगठन काम कर रहे हैं, प्रोफेसर कोगाजी ने 80,000 से अधिक शब्दों का हिन्दी-जापानी शब्दकोष तैयार किया है जिसमें इन शब्दों का प्रयोग भी बताया है। टोकियों के अति प्रतिष्ठित विदेशी भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय में सौ वर्षों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। यहां के पुस्तकालय में 70,000 के लगभग हिंदी पुस्तक-पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। हिन्दी फिल्में भी खूब देखी जा रही हैं। जापान की फिल्म निर्माता कंपनी निक्कात्सू के उपाध्यक्ष का कहना है कि जापान में हिन्दी फिल्मों की मांग बढ़ गई है, इसीलिए उनकी कंपनी ने हिन्दी फिल्म उद्योग के यशराज बैनर से समझौता कर लिया है। कहा जा सकता है कि हिन्दी स्वयं अपना प्रचार कर रही है। परेतु साथ ही जापान के उन हिन्दी विद्वानों की भी प्रशंसा करनी होगी जो तन-मन-धन से हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं।

परदेस में 'राम की अयोध्या'

थाईलैंड में 94 प्रतिशत बौद्ध हैं। इसके बावजूद वहां के राजा को राम का प्रतिनिधि माना जाता हे। वहां का राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह गरूड़ है और प्रतिदिन राम कथा पर अनेक कार्यक्रम होते हैं थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक के हवाइ अड्डे का नाम है स्वर्णभूमि एयरपोर्ट। हवाई अड्डे से बैंकॉक शहर की तरफ बढ़ने पर 'राम स्ट्रीट' और 'अशोक स्ट्रीट' जैसे साइनबोर्ड दिखने लगते हैं। इन सबको देखकर हरेक भारतीय पर्यटक थाईलैंड को अपना-सा मानने लगता है। दरअसल, आसियान देश थाईलैंड में सरकार भी हिन्दू धर्म का आदर करती है। यद्यपि थाईलैंड में 94 प्रतिशत बौद्ध हैं। थाईलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह गरूड़ है। पौराणिक कथाओं में गरूड़ को विष्णु की सवारी माना गया है। गरूड़ के लिए कहा जाता है कि वह आधा पक्षी और आधा पुरूष है। उसका शरीर इनसान जैसे है, पर चेहरा पक्षी से मिलता है। उसके पंख हैं। अब प्रश्न उठता है कि जिस देश की 94 प्रतिशत आबादी बौद्ध हो वहां पर हिन्दू धर्म के प्रतीकों को इतना सम्मान क्यों? उल्लेखनीय है कि कभी थाईलैंड भी हिन्दू देश ही था। एक सामान्य थाइ गर्व से कहता है कि उसके पूर्वज हिन्दू थे और उसके लिए हिन्दू धर्म भी आदरणीय है। ❖

हिन्दू धर्म और राज परिवार

हिन्दू धर्म का थाईलैंड के राज परिवार पर सदियों से गहरा प्रभाव है। माना यह जाता है कि थाईलैंड के राजा भगवान विष्णु के अवतार हैं। इसी भावना का सम्मान करते हुए थाईलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक गरूड़ है। यहां तक कि थाईलैंड की संसद के सामने गरूड़ की मूर्ति स्थापित है। वहां कभी साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए। हां, जिहादियों की नजर जरूर पड़ी है। जिहादियों ने 2015 में बैंकॉक के ब्रह्मा मंदिर में बम विस्फोट किया था, जिसमें 27 लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे के बाद थाईलैंड सरकार ने मंदिरों की सुरक्षा व्यवस्था को काफी चाक-चौबंद कर दिया है। ❖

राम के प्रतिनिधि राजा!

थाईलैंड के राजा को राम कहा जाता है। उसके नाम के साथ अनिवार्य रूप से राम लगता है। राज परिवार अयोध्या नामक शहर में रहता है। यह स्थान बैंकॉक से 50-60 किलोमीटर दूर है। यह बहुत खूबसूरत शहर है। यहां पर बौद्ध मंदिरों की भरमार है, जिनमें भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूतियां स्थापित हैं। कया यह कम हैरानी की बात है कि बौद्ध होने के बावजूद थाईलैंड के लोग अपने राजा को राम का वंशज और विष्णु का अवतार मानते हैं। इसलिए थाईलैंड में एक तरह से 'राम राज्य' है।

क्या है रोहिंग्या मुस्लिम समस्या

- डॉ. अमरीक सिंह

रोहिंग्या मुसलमानों पर पांचजन्य में प्रकाशित यह लेख कुछ वर्ष पहले का है लेकिन वर्तमान में काफी प्रासंगिक है। गजवा-ए-हिन्द यानी भारत को जीतने का पुराना स्वप्न, कुत्सित आंखों की विभिन्न चरणों की योजना सदियों से चल रही है। खासी सफल भी हुई है। वृहद् भारत की बहुत सारी धरती भारत से अलग की जा चुकी है। बंगलादेश को विराट भारत से अलग करने के षडयंत्र के बारे में पिछले अंक में चर्चा हो चुकी है। उसी षडयंत्र के एक और भाग म्यांमार की बातचीत आज करना चाहता हूं।

मूलत: पूजक, प्रकृति पूजक, बौद्ध तंत्र तथा बौद्ध मत की महायान शाखा को मानने वाला म्यांमार या बर्मा भारत, थाईलैंड, लाओस, बंगलादेश और चीन से घिरा हुआ देश है। इसका क्षेत्र 6,76,578 वर्ग किलोमीटर का है। इसकी धरती रत्नगर्भा है। माणिक जैसे कीमत जवाहरात, तेल, प्राकृतिक गैस और अन्य खनिज संसाधनों से समृद्ध यह देश बहुत समय से उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है। यहां सैन्य शासन लगातार उपस्थिति बनाये हुए है। सैन्य शासन समाप्त होने के बाद भी राजनीतिक दल सैन्य अधिकारियों से भरे हुए हैं।

बर्मा में भी मुस्लिम कन्वर्जन के साथ संसार के अन्य सभी देशों में होने वाली उथल-पुथल शुरू से है। सभी गैरमुस्लिम देशों, जिनमें इस्लाम का प्रवेश हो गया हो, में मुस्लिम जनसंख्या बढ़ने पर एक विशेष प्रवृत्ति पायी जाती है। हम मुसलमान अब अधिक संख्या में हैं और अन्य मतावार्लंबियों की जीवनशैली हमसे भिन्न है। अत: हम उनके साथ नही रह सकते। हमें अलग देश चाहिए। ये हाय-हत्या अन्य देशों में जैसे मुस्लिम जनसंख्या बढ़ने के साथ होने लगती है, वैसी ही बर्मा में भी होती आई थी। मगर इसकी स्थिति द्वितीय विश्व युद्ध के काल में विस्फोटक हुई। ब्रिटिश उपनिवेश रहे बर्मा पर द्वितीय विश्व युद्ध के समय जापानी सेना ने हमला बोला। ब्रिटेन के पांव उखड़ने लगे। पीछे हटते हुए ब्रिटिश राज ने बर्मा में जापानियों के खिलाफ अपने छिपे दस्ते बनाने की कोशिश में रोहिंग्या मुसलमानों को ढेरों शस्त्र उपलब्ध कराये। इन लोगों ने रोहिंग्या मुसलमानों को आश्वासन दिया कि इस युद्ध में यदि उन्होंने ब्रिटेन का साथ दिया तो उन्हें इस्लामी राष्ट्र दे दिया जाएगा।

हथियार पाकर रोहिंग्या मुसलमान भारत के मोपला मुसलमानों की तरह उपद्रव पर उत्तर आये और उन्होंने जापानियों से लड़ने की जगह अरकान के बौद्धों पर हमला बोल दिया। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा भारत में गांधी के नेतृत्व में खिलाफत आंदोलन के समय हुआ। जैसे अंग्रेजों के खिलाफ और तुर्की के खलीफा के पक्ष में आंदोलन करते मोपला मुसलमान हिन्दुओं पर क्रोध उतारने लगे और उन्होंने लाखों हिन्दुओं की हत्या की, उसी तरह रोहिंग्या मुसलमान अंग्रेजों की कृपा से अपना राज्य पाने की जगह स्वयं ही बौद्धों को मिटा कर इस्लामिक राष्ट्र पाने की दिशा में चल पड़े। जिस तरह 1946 में कलकत्ता में किये गए डायरेक्ट एक्शन में एक दिन में मुस्लिम गुंडों ने 10,000 हिन्दुओं को मार डाला था, उसी तरह 28 मार्च 1942 को रोहिंग्या मुसलमानों ने बर्मा के मुस्लिम-बहुल उत्तरी अराकान क्षेत्र में 20,000 से अधिक बौद्धों को मार डाला।

मई, 1946 में बर्मा की स्वतंत्रता से पहले अराकानी

मुस्लिम नेताओं ने भारत में मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना से संपर्क किया और माऊ क्षेत्र को पूर्वी पाकिस्तान में शामिल कराने के लिए उनकी सहायता मांगी। इसके पूर्व अराकान में जमीयत- उलेमा-ए-इस्लाम नामक एक संगठन की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य भी अराकान के सीमांत जिले मायू को पूर्वी पाकिस्तान में मिलाना था। स्वाभाविक था कि बर्मा सरकार ने मायू को स्वतंत्र इस्लामी राज्य बनाने या उस पूर्वी पाकिस्तान में शामिल करने से इनकार कर दिया। इससे क्रुद्ध उत्तरी अराकान के मुजाहिदों ने बर्मा सरकार के खिलाफ जिहाद की घोषणा कर दी। मायू क्षेत्र के दोनों मुस्लिम-बहुल शहरों ब्रथीडौंग एवं मौंगडाऊ में अब्दुल कासिम के नेतृत्व में लूट, हत्या, बलात्कार एवं आगजनी का भयावह खेल शुरू हो गया और कुछ ही दिनों में इन दोनों शहरों से बौद्धों को या तो मार डाला गया अथवा भगा दिया गया। अपनी जीत से

उत्साहित होकर सन् 1947 तक पूरे देश के प्रायः सभी मुसलमान एकजुट हो गये एवं मुजाहिदीन मूवमेंट के नाम से बर्मा पर लगभग आंतरिक आक्रमण ही कर दिया गया। स्थिति इतनी भयानक हो गयी कि 1949 में तो बर्मा सरकार का नियंत्रण अराकान के केवल अकयाब शहर तक सीमित रह गया, बाकी पूरे अराकान पर जिहादी मुसलमानों का कब्जा हो गया।

बर्मा ने 1946 में स्वतंत्रता प्राप्त की और तभी से वहां उपद्रव प्रचंड हो गया। रोहिंग्या मुसलमानों ने बर्मा की स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही बर्मा से अलग होकर पाकिस्तान पूर्वी पाकिस्तान, जो अब बंगलादेश बन गया है, में शामिल होने का संघर्ष छेड़ दिया। रात-दिन लहसा की घटनाएं होने लगी। विवश होकर बर्मा सरकार ने सैन्य कार्रवाही के आदेश दिये। विश्व के लगभग प्रत्येक मुस्लिम देश ने बर्मा सरकार के इस अभियान की भर्त्सना की परन्तु सरकार पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा और सेना ने पूरे क्षेत्र में जबरदस्त रूप से आतंकवादियों को पकड़ना शुरू कर दिया। हजारों धावे किये गए। जिहादियों की कमर तोड़ दी गयी और अधिकतर जिहादी जान बचाकर पूर्वी पाकिस्तान भाग गये, कुछ भूमिगत हो गये और अन्दर ही अन्दर विश्व के कट्टरपंथी इस्लामी गुटों के सम्पर्क में रहे। अपनी शक्ति बढ़ाते रहे और जिहाद के लिए सही अवसर की प्रतीक्षा करते रहे।

यह अवसर उन्हें 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के बंगलादेश के रूप में उदय के बाद फिर से मिला। बचे खुचे जिहादियों में फिर छटपटाहट शुरू हुई और 1972 में जिहादी नेता जफ्फार ने रोहिंग्या लिबरेशन पार्टी आरएलपी बनाई और बिखरे जिहादियों को इकठ्ठा करना शुरू किया। हथियार बंगलादेश से मिल गए और जिहाद फिर शुरू हो गया। परन्तु 1974 में फिर से बर्मी सेना की कार्रवाई के आगे पार्टी बिखर गई और इसका नेता जफ्फार पिट-छित कर बंगलादेश भाग गया। इस हार के बाद पार्टी का सचिव मोहम्मद जर हबीब सामने आया और उसने मुस्लिम जिहादियों के साथ रोहिंग्या पैट्रियाटिक फ्रंट का गठन किया। इसी फ्रंट के सीइओ मोहम्मद यूनुस ने रोहिंग्या सोलिडेरिटी आर्गनाइजेशन आरएसओ बनाया और उपाध्यक्ष रहे नूरुल इस्लाम ने अराकान रोलहग्या इस्लामिक फ्रंट एआरआई.एफ का गठन किया।

इन जिहादी संगठनों की मदद के लिए पूरा इस्लामी जगत सामने आ गया। इनमें बंगलादेश एवं पाकिस्तान के सभी इस्लामी संगठन, अफगानिस्तान का हिज्बे-इस्लामी, भारत के जम्मू-कश्मीर में सक्रिय हिजबुल मुजाहिदीन, इंडियन मुजाहिदीन, मलेशिया के अंकातन बेलिया इस्लाम मलेशिया एबीआईएम तथा इस्लामिक यूथ आर्गनाइजेशन ऑफ मलेशिया मुख्य रूप से शामिल थे। भारत की तरह वहां भी कायरतापूर्ण शान्ति और झूठी एकता का पाठ पढ़ाने वाले नेताओं का कुचक्र चल रहा था। ऐसे में मांडले के बौद्ध भिक्षु पूज्यचरण अशीन विराथु सामने आये। जिन्होंने अपने प्रभावशाली भाषणों से जनता को समझाया कि यदि अब भी वे नही जागे तो उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा। इसी दौरान कुछ लहसक झड़पें हुईं कई बौद्ध मारे गये। शनैः -शनैः जनता इन झगड़ों का मूल कारण जिहाद और उसके कारण होने वाली दुर्दशा को समझने लगी। जब अपनी जिन्दगी पर प्रभाव पड़ता है तो स्वाभाविक ही नींद खुल जाती है। अंततोगत्वा जनता का धैर्य टूट गया और लोग भड़क उठे। यहां तक कि दुनिया में सबसे शान्तिप्रिय माने जाने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने भी हथियार उठा लिया। फिर तो बर्मा की तस्वीर ही बदलने लगी। इस्लामी आतंकवाद की पैदावार लहसक झड़पों एवं उनके भड़काऊ भाषणों पर पूज्य अशीन विराथु के तेजस्वी भाषणों से बर्मा की सरकार ने सेकुलरिज्म दिखाते हुए विराथु को 25 वर्ष की सजा सुनायी थी। लेकिन देश जाग चुका था और विराथु के जेल जाने के बाद भी देश जलता रहा और जनता के जबरदस्त दबाव में सरकार को उन्हें उनकी सजा घटाकर केवल सात साल बाद 2011 में ही जेल से रिहा करना पड़ा। रिहा होने के पश्चात भी विराथु की कट्टर राष्ट्रवादी सोच में कोई परिवर्तन नही हुआ। और वे अनवरत रूप से अपने अभियान में लगे रहे।

28 मई, 2012 को मुस्लिम गुंडों ने एक बौद्ध महिला का बलात्कार करके हत्या कर दी। इसके बाद पूरे बर्मा के बौद्ध अत्यंत उग्र हो गये और फिर तो वहां ऐसी आग लगी कि पूरा देश जल उठा। म्यांमार के दंगों में विराथु के भड़काऊ भाषणों ने आग में घी का काम किया। उन्होंने साफ कहा कि अब यदि हमें अपना अस्तित्व बचाना है तो अब शांत रहने का समय नही है। उन्होंने बुद्ध के अहिंसा-शांति के उपदेशों के रास्ते को छोड़कर आक्रमण की नीति अपनाने के उपदेश दिए। उन्होने म्यांमार की जनता को साफ कहा कि अगर हमने इनको छोड़ा तो देश से बौद्धों का सफाया हो जाएगा और बर्मा मुस्लिम देश हो जायेगा।

विराथु ने जनगणना के आंकड़ों से तथ्यात्मक रूप से सिद्ध किया कि मुस्लिम अल्पसंख्यक बौद्ध लड़कियों को फंसाकर शादियां कर रहे हैं एवं बड़ी संख्या में बच्चे पैदा करके पूरे देश के जनसंख्या-संतुलन को बिगाड़ने के मिशन में दिन-रात लगे हुए हैं। जिसके कारण बर्मा की आन्तरिक सुरक्षा के लिये भारी संकट पैदा हो गया है। इनका कहना है कि मुसलमान एक दिन पूरे देश में फैल जाएंगे और बर्मा में बौद्ध का नरसंहार शुरू हो जाएगा। विराथु के विचारों का जनसाधारण में प्रचंड समर्थन देखकर वहां की सरकार भी झुकी और वहां की राष्ट्रपति ने सार्वजनिक रूप से कहा- इस्लामी आतंकियों को अब अपना रास्ता देख लेना चाहिए। ❖

गौरी लंकेश हत्याकांड-जवाब माँगते कुछ सवाल

- लोकेन्द्र सिंह

लोकतंत्र और सभ्य समाज में हत्या के लिए किंचित भी स्थान नहीं है। किसी भी व्यक्ति की हत्या मानवता के लिए कलंक है। चाहे वह सामान्य व्यक्ति हो या फिर लेखक, पत्रकार और राजनीतिक दल का कार्यकर्ता। हत्या और हत्यारों का विरोध ही किया जाना चाहिए। लोकतंत्र किसी भी प्रकार तानाशाही या साम्यवादी शासन व्यवस्था नहीं है, जहाँ विरोधी को खोज-खोज कर खत्म किया जाए। लोकतंत्र में गौरी लंकेश की हत्या का विरोध ही किया जा सकता है, समर्थन नहीं। किंतु, जिस तरह से लंकेश की हत्या के तुरंत बाद पूरे देश में एक सुर से भाजपा, आरएसएस और हिंदुत्व को हत्यारा ठहराया गया, क्या यह उचित है? यह पत्रकारिता का धर्म तो कतई नहीं है। अनुमान के आधार पर निर्णय सुनाना कहाँ जायज है? पत्रकारों को तथ्यों के प्रकाश में अपने सवाल उछालने चाहिए। पत्रकारों का यह काम नहीं है कि न्यायाधीश बन कर या बिना जाँच-पड़ताल तत्काल किसी मामले में निर्णय सुना दें। आखिर किस आधार पर पत्रकारों ने एक सुर में भाजपा और आरएसएस को लंकेश की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराया और देश में राष्ट्रीय विचारधारा के प्रति घृणा का वातावरण बनाने का प्रयास किया? क्या सिर्फ इसलिए कि वह कम्युनिस्टों की घोर समर्थक थीं और स्वयं को कॉमरेड कहती थीं? क्या सिर्फ इसलिए कि गौरी लंकेश अपने फेसबुक-ट्वीटर अकांउट और अपनी पत्रिका 'लंकेश पत्रिके' में ज्यादातर राष्ट्रीय संगठनों के खिलाफ लिखती थीं?

गौरी लंकेश के इस प्रकार लिखने के आधार पर यदि आप मान कर बैठ गए हैं कि उनकी हत्या राष्ट्रीय विचारधारा ने की है, तब आप निपट नासमझ हैं। क्योंकि, ऐसा लिखने-बोलने वाले और भी बहुत से लोग हैं, जिनकी लोकप्रियता एवं प्रभाव लंकेश से कहीं अधिक है। एक बात और, मानहानि प्रकरण में लंकेश का दोष सिद्ध होने पर भाजपा तो लोकतंत्र में नैतिक लड़ाई जीत ही गई थी। माननीय न्यायालय ने लंकेश को तथ्यहीन और मानहानिकारक लिखने का दोषी पाते हुए छह माह कारावास की सजा सुनाई थी। वह जमानत पर जेल से बाहर चल रही थीं। इसलिए हमें अपनी आँखों पर पड़े पर्दे को हटा कर लंकेश की हत्या के दूसरे एंगल भी देखने चाहिए। उन्हें न्याय दिलाना है, उनके कातिलों को पकड़वाना है और उनकी हत्या के वास्तविक कारणों का खुलासा करना है, तब अन्य पहलुओं की पड़ताल करनी ही चाहिए। यदि हत्या पर सियासत ही करनी है, तब किसी कुछ और सोचने की जरूरत नहीं।

गौरी लंकेश को धमकी सिर्फ कथित भगवा बिग्रेड से ही नहीं मिलीं थी, उन्हें नक्सलियों की ओर से भी धमकियां आ रही थीं। खबरों के मुताबिक लंकेश कांग्रेसनीत कर्नाटक सरकार के किसी मंत्री के घोटाले को उजागर करने की भी तैयारी कर रही थीं। इन सब बातों की अनदेखी कर कथित पत्रकारों ने एक ही पक्ष पर लक्षित हमला क्यों बोला? समाज में विमर्श इन्हीं सवालों के इर्द-गिर्द चल रहा है। आप जिधर ले जाना चाहते थे, आम आदमी उधर नहीं गया। क्योंकि, उसे आपके विरोध में स्वाभाविक पीड़ा कम, सियासत अधिक दिखाई दे रही थी।

गौरी लंकेश की हत्या के बाद राजनीतिक रंग ले चुके विरोध प्रदर्शन और बहस के बीच बहुत से जरूरी सवाल आम समाज से लेकर बौद्धिक जगत में जवाब माँग रहे हैं। यह सवाल ऐसे नहीं हैं, जिन्हें यह कह कर खारिज किया जाए कि इनका औचित्य क्या है? लंकेश के समर्थन में प्रारंभ हुई मुहिम को कमजोर करने के लिए पूछे जा रहे हैं यह सवाल, ऐसा कह कर भी उन्हें टाला नहीं जा सकता। आखिर, सवालों से कोई मुहिम कमजोर कैसे और कब हो

सकती है? सवाल ही तो हैं, जो मुहिम की बुनियाद में होते हैं। सवाल ही तो होते हैं, जिनके जवाब खोजने के लिए लोग आवाज बुलंद करते हैं। इसलिए सवालों की उपेक्षा किसी भी सूरत में नहीं करनी चाहिए। अब सवाल देखिए और उनके जवाब खुद ही तलाशिए, क्योंकि लंकेश की हत्या पर सियासत कर रहे लोग इन सवालों के जवाब नहीं देंगे। जब गौरी लंकेश का भाई इंद्रजीत ही टाइम्स ऑफ इंडिया और एनडीटीवी सहित अन्य मीडिया संस्थानों से बातचीत में बार-बार कह रहा है कि पिछले कुछ दिनों में नक्सलियों से गौरी को धमकी भरे पत्र मिले थे। चूँकि गौरी नक्सलियों को मुख्यधारा में लाने की मुहिम की अगुवाई कर रही थीं, कुछ नक्सलियों को मुख्यधारा से जोड़ने में वह सफल भी हुई थीं, जिसकी वजह से वह नक्सलियों के निशाने पर थीं और उन्हें लगातार धमकी भरी चिट्ठी और ईमेल आते थे। उनके भाई की चिंता सही भी है। हम जानते हैं कि जासूसी और गद्दारी के शक मात्र में नक्सली संदेही के पूरे परिवार तक को जिंदा जला देते हैं। गौरी के आखिरी ट्वीट भी इशारा कर रहे हैं कि कॉमरेडों के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा था। फिर क्यों, पत्रकारों ने गौरी की हत्या का आरोपी नक्सलियों को नहीं बनाया?

2. गौरी लंकेश पहली पत्रकार नहीं है, जिनकी हत्या की गई है। कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपीजे) की एक रिपोर्ट के मुताबिक 1992 से 2017 के बीच 40 पत्रकारों की हत्या की गई है। 39 पत्रकारों की हत्या पर इतना आक्रोश प्रकट क्यों नहीं हुआ? क्या लंकेश की हत्या का इंतजार किया जा रहा था? या फिर पहले मरने वाले पत्रकार हिंदी और अन्य भारतीय भाषा के पत्रकार थे। या फिर यह महानगरों में पत्रकारिता नहीं करते थे, बल्कि क्षेत्रीय स्तर के पत्रकार थे। या फिर इसलिए कि इनके वैचारिक पक्ष की जानकारी पत्रकारों को नहीं हो सकी थी?
3. गौरी लंकेश की हत्या कर्नाटक के प्रमुख शहर बेंगलूरू में हुई। कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है और सिद्धारमैया मुख्यमंत्री हैं। जिस तरह खुलेआम लंकेश की हत्या हुई, उसके लिए कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से सवाल क्यों नहीं पूछे जा रहे? लचर कानून व्यवस्था के लिए राज्य सरकार को कठघरे में खड़ा करने की जगह केंद्र सरकार पर हमला क्यों बोला जा रहा है? क्या सिर्फ इसलिए कि कर्नाटक सरकार पर हमला बोलने से वैचारिक स्वार्थ पूर्ति नहीं हो पाएगी? हत्या का विरोध असल मकसद नहीं है, बल्कि सियासत करन पहला उद्देश्य है।
4. गौरी लंकेश की हत्या को कलबुर्गी से जोडने के लिए एक जैसे हथियार की थ्योरी खोजकर लाने वालों ने कांग्रेस के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से यह पूछने की जहमत क्यों नहीं उठाई कि कलबुर्गी के हत्यारों का क्या हुआ? दो साल से अधिाक समय कांग्रेस सरकार को हो गया, इसके बाद भी कलबुर्गी के मामले का पटाक्षेप नहीं हो पाया। अब तक हत्यारे खुले क्यों घूम रहे हैं?
5. पत्रकार, कम्युनिस्ट लेखक-विचारक एवं अन्य राजनीतिक दलों ने बहुत जल्दी में निर्णय क्या इसलिए सुना दिया ताकि वास्तविक तथ्यों, प्रश्नों पर पर्दा डाला जा सके? क्या यह कोई नेटवर्क है, जो किसी खास प्रकार की घटनाओं पर अत्यधिक तेजी से सक्रिय होता है, जबकि केरल में असहमति और वैचारिक भिन्नता के आधाार पर लगातार हो रही हत्याओं पर पर्दा डालने का प्रयास करता है?

बहरहाल, प्रश्न भले ही वाजिब हों लेकिन किसी की हत्या को संदेह के घेरे में खड़ा नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक सूरत में हत्या का पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए। भले ही वह आपका घोर विरोधी रहा हो, आपके लिए अमर्यादित भाषा-शैली का उपयोग करता रहा हो। गौरी लंकेश के सोशल मीडिया प्रोफाइल के मुताबिक भले ही उन्होंने केरल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की हत्या पर स्वच्छ केरल का संदेश प्रसारित किया हो, लेकिन इस आधार पर किसी ओर को स्वच्छ कर्नाटक हैसटैग चलाने का अधिकार नहीं मिल जाता है। बस्तर में नक्सलियों के हाथों 76 जवानों की हत्या पर पार्टी का आयोजन करने वाले उचित ही कह रहे हैं कि गौरी लंकेश की हत्या पर खुशी जाहिर कर रहे लोग बेशर्म हैं। निश्चित तौर पर यह स्वस्थ परंपरा नहीं है। बहरहाल, गौरी लंकेश की हत्या के बाद कर्नाटक ही नहीं, अपितु पूरे देश में जिस प्रकार का राजनीतिक वातावरण बनाया गया है, उसने एक बार फिर देश में बनावटी असहिष्णुता का माहौल बना दिया है। हालाँकि, इस माहौल में एक बार फिर कम्युनिस्ट नेटवर्क का खुलासा हो रहा है। ❖

10 बातें जो विद्यार्थियों को नहीं सिखाई जातीं

रतन टाटा ने एक स्कूल में भाषण के दौरान 10 बातें बताईं, जो विद्यार्थियों को नहीं सिखाई जातीं।

1. जीवन उतार-चढ़ाव से भरा है, इसकी आदत बना लो।
2. लोग तुम्हारे स्वाभिमान की परवाह नहीं करते इसलिए पहले खुद को साबित करके दिखाओ।
3. कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद 5 आंकड़े वाली पगार की मत सोचो, एक रात में कोई वाइस प्रेसिडेंट नहीं बनता। इसके लिए अपार मेहनत करनी पड़ती है।
4. अभी आपको अपने शिक्षक सख्त और डरावने लगते होंगे क्योंकि अभी तक आपके जीवन में बॉस नामक प्राणी से पाला नहीं पड़ा।
5. तुम्हारी गलती सिर्फ तुम्हारी है, तुम्हारी पराजय सिर्फ तुम्हारी है। किसी को दोष मत दो, गलती से सीखो और आगे बढ़ो।
6. तुम्हारे माता पिता तुम्हारे जन्म से पहले इतने नीरस और उबाऊ नहीं थे, जितने तुम्हें अभी लग रहे हैं, तुम्हारे पालन पोषण करने में उन्होंने इतना कष्ट उठाया कि उनका स्वभाव बदल गया।
7. सांत्वना पुरस्कार सिर्फ स्कूल में देखने को मिलता है। कुछ स्कूलों में तो पास होने तक परीक्षा दी जा सकती है, लेकिन बाहर की दुनिया के नियम अलग हैं वहां हारने वाले को मौका नहीं मिलता।
8. जीवन के स्कूल में कक्षाएं और वर्ग नहीं होते और वहां महीने भर की छुट्टी नहीं मिलती। आपको सीखाने के लिए कोई समय नहीं देता। यह सब आपको खुद करना होता है।
9. टीवी का जीवन सही नहीं होता और जीवन टीवी के सीरियल नहीं होते। सही जीवन में आराम नहीं होता सिर्फ काम और सिर्फ काम होता है क्या आपने कभी ये विचार किया कि लग्जरी क्लास कार का किसी टीवी चैनल पर कभी कोई विज्ञापन क्यों नहीं दिखाया जाता? कारण यह कि उन कार कंपनी वालों को ये पता है कि ऐसी कार लेने वाले व्यक्ति के पास टीवी के सामने बैठने का फालतू समय नहीं होता।
10. लगातार पढ़ाई करने वाले और कड़ी मेहनत करने वाले अपने मित्रों को कभी मत चिढ़ाओ। एक समय ऐसा आएगा कि तुम्हें उनके नीचे काम करना पड़ेगा। ❖ **साभार: शिशु मंदिर संदेश**

इंटरनेट के इस युग में सतर्क रहें माता पिता

आज के परिप्रेक्ष्य में इंटरनेट हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। एक ओर जहां माता-पिता दोनों अपने काम में व्यस्त रहते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चे इंटरनेट रूपी समुद्र में डूबे हुए हैं। अभी हाल ही में सुर्खियों में आया 'ब्लू व्हेल' नामक खेल, इस काली दुनिया का एक घिनौना उदाहरण है। अब तक पूरी दुनिया में 250 से ज्यादा लोग इस खेल का शिकार हो चुके हैं। इस खेल में, खेलने वाले को भांति-भांति की चुनौतियां दी जाती हैं तथा अंत में उसे आत्महत्या करने के लिए कहा जाता है। ऐसा करने वाला व्यक्ति विजेता घोष्ज्ञित किया जाता है। इस खेल ने भारत में भी दस्तक दे दी है। अभी कुछ दिन पहले ही मुंबई में एक 14 साल के लड़के ने यह खेल खेलते हुए, अपनी सोसाइटी की इमारत से कूद कर जान गवां दी। ना जाने कितने ही ऐसे भयानक खेलों से इंटरनेट भरा पड़ा है।

यह समस्त मानवजाति के लिए खतरे की घंटी है। इंटरनेट पर पैसे कमाने के प्रलोभन दिए जाते हैं, जिसका शिकार भोले-भाले युवा बन जाते हैं। महिलाओं के लिए तो ये प्रलोभन कई ज्यादा भयावह परिणाम लिए हुए होते हैं। मासूम बालक, बालिकाएं कब इस दलदल में समां जाते हैं, परिवार को इसकी भनक नहीं नहीं लगती। आज समय की यह मांग है कि माता-पिता सदैव जागरूक रहें, अपने बच्चों के ऊपर निरंतर नजर बनाए रखें। बच्चों को कम उम्र में मोबाइल फोन ना दें। बच्चे कब खेल-खेल में इस काली दुनिया का शिकार बन जाते हैं, यह पता लगाना भी बहुत मश्किल होता है। अगर बच्चा अचानक से कुछ खिन्न रहने लगे, चुप-चुप रहे, अंतर्मुखी दिखाई पड़े, तो माता-पिता इसे हल्के में ना लें। बच्चे की गतिविधियों पर नजर रखें एवं मोबाइल व कंप्यूटर की जांच अवश्य करें कि बच्चा इन्टरनेट पर किन-किन साइट्स को देख रहा हे।

आज कल ऐसे सॉफ्टवेयर मुफ्त उपलब्ध हैं जिनसे आप इंटरनेट उपयोग की हिस्ट्री देख सकते हैं। मां-बाप कोशिश करें कि घर का कंप्यूटर ऐसी जगह रखा जाए जहां कंप्यूटर स्क्रीन सबकी नजर के दायरे में हो। देर रात तक उपयोग करने के लिए मोबाइल फोन बच्चों को ना दिया जाएं। बच्चों को यह सिखाया जाए कि अपनी फोटो किसी अनजान के साथ साझा ना करें, ना किसी अनजान वेबसाइट पर ही अपलोड करें। आपकी जरा सी लापरवाही आपके बच्चे के लिए घातक साबित हो सकती है। ❖

प्रश्नोत्तरी

1. प्रथम भारतीय पूर्णकालिक महिला रक्षा मंत्री कौन हैं?
2. कोरियाई सुपर सीरिज प्रतियोगिता किस खिलाड़ी ने जीती?
3. चुनाव आयोग का एंबेसडर किस हिमाचली छात्रा को बनाया गया है?
4. अचल कुमार ज्योति कौन हैं?
5. हिमाचल प्रदेश का पहला एम्स कहाँ स्थापित किया जा रहा है?
6. प्रधानमंत्री द्वारा हाल ही में कौन से बाँध का लोकार्पण किया गया?
7. यह बाँध किस राज्य व किस नदी पर बनाया गया है?
8. चित्र भारती द्वारा लघु फिल्म फेस्टीवल किस शहर में आयोजित किया जा रहा है?
9- SIAM का पूरा नाम क्या है?
10. सीजीएसटी व एसजीएसटी क्या हैं?

चुटकुले

1. दुकानदार: कैसा सूट दिखाऊं?
   महिला: पड़ोसन तड़प-तड़प कर दम तोड़ दे ऐसा.....

2. टीचर: संजू यमुना नदी कहां बहती है?
   संजू: जमीन पर
   टीचर: नक्शे में बताओ कहां बहती है?
   संजू: नक्शे में कैसे बह सकती है, नक्शा गल नहीं जाएगा।

3. राजू (नौकर से): जरा देख तो, बाहर सूरज निकला या नहीं?
   नौकर: बाहर तो अंधेरा है!
   राजू: अरे तो टॉर्च जलाकर देख ले कामचोर।

4. मोनू: सर, मुझे कुछ याद नहीं रहता।
   टीचर: अच्छा, बताओ कि क्लास में तुम्हारी पिटाई कब हुई थी?
   मोनू: सर, मंगलवार को।
   टीचर: यह कैसे याद रह गया?
   मोनू: सर प्रैक्टिकल में नहीं, थ्योरी में प्रॉब्लम है।

5. बुद्धू एक बार डबल डेकर बस में चढ़ गया...
   कंडक्टर ने उसे ऊपर भेज दिया, बुद्धु थोड़ी ही देर में भागता हुआ वापिस आया और बोला
   ''ओ! कन्डक्टर मरवाएगा क्या ऊपर तो ड्राइवर ही नहीं है''

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को प्रदर्शित करते पोलिटून्स

साभार: पॉलिटिकल पंगा

साभार: BBC हिन्दी

HIM AGRO FOOD CORPORATION

Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

देश दुनिया को प्रभावित करने वाली हिन्दुत्व से जुडी विश्व की एकमात्र और विश्वसनीय हिन्दी न्यूज वेबसाईट

www.Hindutva.info

कोई लागलपेट नहीं सिर्फ पूरा सच

Share

- हिन्दूत्व के आधार को दर्शाती एकमात्र मल्टीमीडिया साईट जोकि है पूरे भारत में लोकप्रिय है।
- 1.5 करोड़ से भी ज्यादा फालोअरस।
- हिन्दू धर्म से जुडी पूरी जानकारी।
- राजनीति की तह तक जाने वाली सच्चाई पर आधारित खबरें व खुलासे।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।